पंचम अध्याय

नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण –एक तुलना

तुलनात्मक साहित्य कई देशों, युगों, भाषाओं और शैलियों के साहित्य का अध्ययन करता है । अध्ययन के तहत संस्कृतियों के ऐतिहासिक, लिंग, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक, धार्मिक और भाषाई पहलुओं को बनाने वाले जटिल भागों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, इस क्षेत्र के विद्वान एक दूसरे की तुलना में साहित्य का अध्ययन करते हैं । तुलनावादी बिना सीमाओं के साहित्य का अध्ययन करके शैली और अर्थ की गहरी समझ विकसित कर सकते हैं। इस प्रकार का अध्ययन एक साथ कई साहित्यिक परंपराओं और भाषाओं का मूल्यांकन करता है ।

तुलनात्मक साहित्य एक स्वायत्त विषय है, जो समग्र रूप से विभिन्न भाषाओं में विविध साहित्यिक कार्यों की व्यापकता और पहुँच बढाती है । यह सिर्फ विभिन्न भाषाओं के साहित्य की तुलना करने की बारे में नहीं है बल्कि यह कलात्मक और वैचारिक क्षेत्रों में मानवीय उपलब्धियों की तुलना करने के बारे में भी है। संक्षेप में, तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में क्षेत्रीय या भौगोलिक सीमाओं और वैचारिक श्रेणियों से परे साहित्य का विश्लेषण शामिल है ।

तुलनात्मक साहित्य का विषय ही ऐसा है कि वास्तव में ज्ञान के अन्य क्षेत्रों तक विस्तारित है । हालाँकि, ऐसे तुलनात्मक विश्लेषण तब फलते–फूलते हैं जब ज्ञान के ये क्षेत्र सामंजस्यपूर्ण रूप से संरेखित होते हैं, जो इसे साहित्य से अलग एक विशिष्ट और स्वतंत्र अनुशासन के रूप में चिह्नित करता है ।

तुलनात्मक साहित्य इस विश्लेषण की सुविधा प्रदान करता है कि किसी राष्ट्र के भीतर विशिष्ट साहित्यिक शैलियाँ कैसे विकसित होती थीं। यह इस बात की भी जाँच करता है कि प्रतिभाशाली लेखकों का समूह किसी विशेष युग के दौरान ही क्यों उभरता है । भाषाई साहित्य के उत्थान और पतन कई दिलचस्प घटनाओं की ओर हमारा ध्यान केंद्रित करता है । एक तुलनात्मक दृष्टि के आधार पर विभिन्न भाषाओं के लेखन कार्यों का अध्ययन करते वक्त उस भाषा के महत्वपूर्ण साहित्यों की पहचान करने में हमें मदद मिलती है।

तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से, विशेष रूप से भारत के संदर्भ में, एकता के उन अंतर्निहित धागों को उजागर करने में हमारी सहायता करता है जो राष्ट्र की स्थापना

के बाद से ही उसके विविध और बहुभाषी ताने-बाने को एक साथ बांधे हुए हैं । यह एकता भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक सार में निहित है । विदेशी भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के साहित्य की तुलना हमें इन आंतरिक धागों की ओर ले जाती है जो राष्ट्रीय और वैश्विक सीमाओं से परे मानव के अंतरात्मा से गूँजते हैं । ऐसे व्यापक परिप्रेक्ष्य अपनाते हुए दो भाषाओं के साहित्य की तुलना में आनेवाली महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए तुलनात्मक अध्ययन से जुडी समस्याओं को समझना आवश्यक है । इन मुद्दों की गहराई में जाकर समानताओं की नींव को उजागर करना और असमानताओं के पीछे के कारणों को उजागर करना ही तुलनात्मक अध्ययन का लक्ष्य है । इसमें साहित्यिक कृतियाँ, उसकी रचनाकारों और उन्हें आकार देने वाली प्रेरणाओं की तुलना करना भी शामिल है । सामाजिक परिस्थितियों से पैदा होने वाले और किसी भाषा के साहित्य की दिशा को संचालित करने वाले साहित्यिक आंदोलन भी तुलनात्मक अध्ययन में शामिल किए जाने योग्य हैं । वर्तमान समय में दलित और महिलाओं के दृष्टिकोण से संबंधित विमर्श सभी भाषाओं के साहित्य में एक केंद्रीय स्थान रखता है, जिसमे तुलनात्मक अन्वेषण की आवश्यकता होती है । विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों में साहित्य की समृद्धि और जटिलताओं को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन के दायरे को यथासंभव व्यापक रूप से विस्तारित करने की आवश्यकता है ।

हमें तुलनात्मक अध्ययन को अधिक प्रचलित और लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता को पहचानना चाहिए । इसका दायरा साहित्य से आगे बढ़कर जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाले विभिन्न आयामों को शामिल करना चाहिए । तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक सर्वव्यापी और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाना इसकी व्यापक समझ और अनुप्रयोग के लिए महत्वपूर्ण है ।

इस अध्याय में मैने नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य वैषम्य को समझने के लिए इनके द्वारा लिखित राम कथा श्रृंखला का सहारा लिया है। दोनों लेखकों के उपन्यासों का तुलना एवं विशलेषण करना ही मेरा लक्ष्य है।

5. 1 नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य-वैषम्य

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी भारत के दो सफल एवं प्रमुख लेखक हैं जिन्होंने धर्म, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं मिथकीय रचनाएँ लिखी है । दोनों लेखक अपने साहित्यिक क्षेत्र में प्रसिद्ध है। नरेंद्र कोहली को 'आधुनिक राम कथा के उन्नायक' एवं

अमीश त्रिपाठी को 'इंडियास लिटरेरी पोपस्टार' कहा जाता है। नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला हिंदी भाषा में लिखी गई थी इसमें जो भारतीय पाठकों को अधिक संवेदनात्मक और साहित्यिक अनुभव प्रदान करते हैं तथा अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला का मूल ग्रंथ अंग्रेजी में लिखा गया है जिसके कारण विदेशियों को भी भारतीय पुराण को पढ़ने और संस्कृति को समझने का अवसर मिला। नरेंद्र कोहली के रामायण पारंपारिक भारत के धार्मिक मूल्य, धर्म एवं संस्कृति पर आधारित होने के कारण भारतीय धार्मिक भावनाएँ उसी प्रकार जीवित है, वहीं दूसरी तरफ हम अमीश त्रिपाठी का रामायण आधुनिक पुनः कथन को दर्शाती है, जिसमें पुराण को नई शैली में प्रस्तुत किया गया है। इनके लेखनों में धार्मिक कथाओं का विचारशीलता और आधुनिकता के साथ पेश किया गया है।

यद्यपि हम यह कह सकते है कि दो लेखकों के लक्षित पाठक वर्ग भिन्न थे। कोहली जी भारतीयों के लिए अनुकूल धार्मिकता से साथ रामायण का पुनः लेखन किया तो अमीश त्रिपाठी के लक्षित दर्शक भारतीयों के साथ साथ विदेशी भी थे ताकि भारतीय पौराणिक कथाओं की सौंदर्य का रसास्वादन विदेशियों द्वारा भी हो सके।

5.1.1 राम का बाल्य जीवन

वाल्मिकी रामायण अथवा आदि रामायण या आदि काव्य के सात काण्ड होते हैं – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड। बालकाण्ड रामायण की सबसे बड़ा काण्ड है जिसमें राम की जन्म एवं बाल्यकाल की कथा से लेकर सीता से उनकी विवाह तक की कथा बताई गई है।

नरेंद्र कोहली की राम कथा की शुरुआत विश्वामित्र की आश्रम से होता है ज़ाहिर सी बात है इसमें राम और उनके छोटे भाइयों के बाल्यकाल की कथा का केवल ज़िक्र हुआ है, वह भी राम और लक्ष्मण की मुख से परिचय कराकर उपन्यासकार ने एक अलग शैली अपनाया है।

अमीश त्रिपाठी के रामायण में राम के बाल्य काल का जिक्र हुआ है उन्होंने भी बाल राम के कथा के विस्तार से नहीं लिखा है किंतु राम लक्ष्मण शत्रुघ्न और भरत के गुरुकुल जीवन इनके कथा की मुख्य प्रसंग है। वशिष्ठ राम को एक देश के शासनकार्य के लिए नियम पालन करने की आवश्यकता के बारे में उन्हें समझाते हैं, वशिष्ठ के नेतृत्व के कारण राम सही अर्थ में न्याय का पालक बनते हैं।

5.1.2 पारिवाररिक संबंध

रामायण से जुड़े नए विचारों का निरंतर प्रवाह होता है और केवल वही विचार जनता द्वारा अपनाए जाते हैं जो समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। भारत के पाठक द्वारा रामायण से जुड़ी जिस तत्व का जो अक्सर सम्मान दिया जाता है वह इसमें दर्शाये गए भावनात्मक संबंध है । यह महाकाव्य कथा मुख्य रूप से जटिल रिश्तों के इर्द-गिर्द घूमती है जिसमें पिता, पुत्र, भाई शासक, प्रजा पति और पत्नी के बीच के रिश्तें भी शामिल है।

5.1.2.1 पिता और पुत्र

रामायण एक ऐसे प्राचीन महाकाव्य है जो बहादुरी और वीरता की कहानियों से परे करुणा, प्रेम और सम्मान पर गहरा ज्ञान प्रदान करता है। रामायण की कथा के पात्रों के बीच जो प्रेम एवं सम्मान है, वह बहुत ही मार्मिक है जो मानव मन को छूता है। इसमें चित्रित पिता और पुत्र के बीच में प्रेम खासकर दशरथ और राम के प्रेम एक ऐसा मिसाल है जो सदियों तक जीवित रहेगा।

5.1.2.1.1 दशरथ और राम

वाल्मीकि रामायण में राम और राजा दशरथ के बीच के रिश्ते बहुत ही गहरा है। उनके बीच प्रेम सम्मान और भक्ति थी। दशरथ राम का सम्मान करते थे और राम की क्षमताओं पर उन्हें विश्वास एवं गर्व था। वह चाहते थे कि राम अयोध्या के सिंहासन पर बैठे और उनके उत्तराधिकारी बने। हालात से मजबूर होकर राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा तो दशरथ पुत्र वियोग में सुलगते रहे। दशरथ अपने वचन के कारण राम के प्रति अपने प्रेम और कैकेयी की इच्छाओं को पूर्ण करने की प्रतिबद्धता के बीच उलझे हुए थे। ऐसे हृदय विदारण निर्णय लेने के बावजूद दशरथ ने राम से प्रेम करना और उनके समर्थन करना जारी रखा। राम का वन में जाने का दुख अंततः उनकी मृत्यु का कारण भी बना।

वाल्मीकि रामायण में राम और दशरथ के बीच के रिश्ते को प्रेम, कर्तव्य और त्याग भरे बंधन के रूप में दर्शाया गया है जो पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालें।

इस पिता और पुत्र के संबंध को नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने अलग शैली में देखा जहाँ शुरुआत में दशरथ को अपने पुत्र राम से किसी प्रकार का लगाव नहीं था।

नरेंद्र कोहली के अनुसार दशरथ ने पहले कौशल्या से विवाह किया और फिर राम का जन्म हुआ। दशरथ राम को केवल कौशल्या के पुत्र मानते थे। राम को उन्होंने अपने वंशज के रूप में कभी स्वीकार नहीं किया। आरंभ में अपने पिता से तिरस्कृत होने के

बावजूद कैकेयी की राम के साथ लगाव के कारण दशरथ भी उनसे प्यार करने लगे और बाद में उनके विश्वास पात्र और सबसे प्रिय पुत्र बन गए। "किंतु, बाद में परिस्थितियाँ बदल गई थीं। कौशल्या आज तक नहीं जान सकी कि यह राम की शालीनता, गुण, दूसरों को जीत लेने की कला के कारण था या कैकेयी अपने महल के अकेलेपन से ऊब गई थी कि वह स्वयं आग्रह कर राम को अपने महल में बुलाने लगी थी। राम कैकेयी का अत्यंत प्रिय हो उठा था और दशरथ भी कैकेयी को देखकर राम के अनुकूल हो गए थे।"[1]

अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला में ऐसा दिखाया गया है कि राम की जन्म के दिन दशरथ और रावण के बीच में युद्ध होता है और सदैव अजय रहे दशरथ को उस दिन पहली बार हार का सामना करना पड़ता है। चूँकी राम का जन्म उसी दिन हुआ था जिस दिन उनको युद्ध में हार गये थे, वे राम को अपनी हार के लिए ज़िम्मेदार ठहराया और उन्हें दशरथ और अयोध्या के लिए पनौती माना। दशरथ का यह आरोप पूरे अयोध्यावासी भी दोहराने लगे और सभी राम को जन्म से ही नापसंद करते थे। सालों बाद जब दशरथ और राम शिकार पर जाते हैं तो राम दशरथ को तेंदुए के आक्रमण से अपनी जान जोखिम में डालकर बचा लेते हैं । सालों से अपने पिता से तिरस्कृत होने के पश्चात अपने पिता की सुरक्षा के लिए साहस करते राम को देख कर दशरथ का हृदय पिघल जाता है और राम को इक्षवाकु के वंशज और अयोध्या के भविष्य राजा के रूप में स्वीकार करते हैं।

"वह मेरी गलती थी। और मैंने तुम्हें, एक छोटे से शिशु को दोष दिया। वह सबसे आसान था। मुझे ऐसा कहना पड़ा, और सबने वह मान लिया। मैंने तुम्हारा जीवन, जन्म के पहले दिन से ही नरक बना दिया। तुम्हें मुझसे नफरत करनी चाहिए थी। तुम्हें अयोध्या से नफरत करनी चाहिए थी।"[2]
"दशरथ तेज़ आवाज़ में बोले, उनकी आवाज़ शिविर के बाहर भी सुनी जा सकती थी। 'उठो, राम चंद्र, रघुवंश के संरक्षक।"[3]

दशरथ की राम के प्रति वैमनस्य और बाद में प्रेम एवं स्वीकार्यता राम कथा में एक ऐसा प्रसंग है जो शायद ही किसी पुनः लिखित राम कथा में हमें नज़र आए। दोनों लेखकों ने राम को एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में चित्रण किया है जिन्हें जन्म से राजकुमार होने के पश्चात भी कोई विशेष अधिकार प्राप्त नहीं हुए। उनकी भाग्य में पिता का प्रेम भी नहीं लिखा था। जन मानस में अपना स्थान बनाने के लिए राम को संघर्ष करना पड़ा था। राम के चरित्र का निरूपण कोहली जी और अमीश जी ने समसमायिक पीढ़ी के उपयुक्तता के अनुरूप किया है।

---

[1] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स 32
[2] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 119
[3] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 122

5.1.2.1.2 रावण और इंद्रजीत

रावण और मंदोदरी के पुत्र एवं लंका के राजकुमार इंद्रजीत को पुराण ग्रंथों में एक महान योद्धा कहा गया है । कहाँ जाता है कि इंद्रजीत जब पैदा हुआ तो उसकी रोने की आवाज़ बिजली की गरजने जैसे था जिसके कारण उसका नाम मेघनाथ रखा गया था। रावण चाहता था कि उसका पुत्र सर्वोच्च योद्धा, अत्यंत ज्ञानी और युद्ध में अपराजित हो । भगवान इंद्र को युद्ध में हराने के बाद मेघनाथ को इंद्रजीत नामक उपाधि प्राप्त हुई जिसका अर्थ है 'इंद्र पर विजेता प्राप्त करने वाला'।

रावण को अपने पुत्र पर गर्व और प्रेम था। नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला में हम देख सकते हैं कि रावण सीता को एक वर्ष के लिए अशोक वाटिका में इसलिए रखने के निर्णय करता है क्योंकि मंदोदरी उसकी सामने ऐसा शर्त रखा था। इंद्रजीत पुत्र होने के नाते अपनी माँ की समर्थन करेगा और रावण का विरोधी बन जाएगा। पुत्र को विरोधी पक्ष में देखने के डर ने उन्हें सीता को एक वर्ष तक पति के वियोग में अशोक वाटिका में रहने की अनुमति देने में मजबूर हो जाता है । पुत्र प्रेम और समर्थन की नष्ट होने में भय में अपनी आशाओं के विरुद्ध जाने के लिए मजबूर होते एक पिता को हम यहाँ देख सकते हैं ।

अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला का रावण अपने परिवार के केवल तीन सदस्यों से सच्चे प्रेम करते थे, वह थे उनके मामा मारीच, छोटा भाई कुंभकर्ण और पुत्र इंद्रजीत। वह अपने पुत्र से बेहद प्रेम करते थे। राम रावण युद्ध से पहले रावण इंद्रजीत को लंका से दूर भेजने का प्रयत्न करता है ताकि इंद्रजीत इस युद्ध में भाग लेकर अपने जान न गवाँ दे किंतु इंद्रजीत अपने पिता को युद्ध में साथ देना चाहता था और इस कारण से वह अलग योजनाएँ बनाता है । रावण चाहते थे कि उनके बाद इंद्रजीत लंका का राजा बने और सीता इसमें उनकी सहायता करें। अपनी मृत्यु के लिए तैयारी कर रहे एक पिता के द्वारा अपने पुत्र के भविष्य की सुरक्षा के लिए प्रयास एवं वृद्ध पिता की बेबसी को लेखक ने यहाँ चित्रण किया है ।

दोनों राम कथा श्रृंखला में रावण को अपनी मृत्यु से पहले अपनी पुत्र की मृत्यु का गवाह बनना पड़ता है । अपनी मृत्यु से पहले अपने पुत्र की मृत्यु की पीड़ा से उसे गुज़रना पड़ता है जो एक प्रकार से रावण को मिलने वाली दंड थी जो मृत्यु से भी पीड़ा दायक था। दोनों लेखकों ने रावण के इस पीड़ा को बहुत ही मार्मिक रूप से चित्रण किया है ।

5.1.2.2 पति और पत्नी

पति-पत्नी की संबंध में प्रेम, भक्ति और धार्मिकता के आदर्श रूप का चित्रण हमें रामायण में मिलता है । भारतवासी रामायण के ज़रिए समर्पण, नैतिक मूल्य और

वैवाहिक आदर्श के लिए प्रेरणा पाते हैं। रामायण में मुख्य रूप से तीन ऐसे पति–पत्नी की जोड़ी है जो वैवाहिक रिश्ते की सही और गलत हमें सिखाते हैं और वह है राम – सीता, रावण – मंदोदरी और दशरथ – कैकेयी।

5.1.2.2.1 राम और सीता

राम और सीता के बीच के प्रेम को अक्सर भारतीय संस्कृति में एक निर्दोष, पवित्र एवं आदर्श प्रेम के उदाहरण के रूप में संदर्भित किया जाता है। त्याग और समर्पण की उनकी प्रेम गाथा का आज भी गुणगान होता है। एक वैवाहिक रिश्ते में किस प्रकार एक दूसरे की उत्थान करें, यह सीख हमें राम और सीता की जीवन से मिलता है। जिस प्रकार सुंदर चाँद में भी दाग होते हैं उसी प्रकार उनके रिश्ते में कई उतार–चढ़ाव आए हैं। जैसे समाज के कारण राम को सीता से अग्नि परीक्षा की माँग करना पड़ा था और जनता के कारण अपनी पत्नी की परित्याग करना पड़ा था। राम के समक्ष एक राजा के धर्म और पति के कर्तव्य के बीच में चुनना पड़ा तो जनसेवक होने के नाते उन्हें एक राजा होने की भूमिका निभाना पड़ा और पत्नी को छोड़ना पड़ा किंतु राम अपनी एक पत्नित्व के निर्णय से कभी पीछे नहीं हटे। अयोध्या के राजा होने के नाते अपने देश के प्रति उनके कुछ कर्तव्य थे जिनमें से मुख्य था अपने वंश को आगे बढ़ाना ताकि अयोध्या का सिंहासन कभी खाली ना रहे। इसके पश्चात भी राम ने कभी दूसरी विवाह करने के बारे में नहीं सोचा। सीता से की एक पत्नीव के वचन को राम ने सदैव निभाया।

अभ्युदय का राम आज्ञानकुलशिला सीता से विवाह करते वक्त उनसे सिर्फ एक ही उम्मीद रखा था, वह था जन कल्याण में राम का साथ देना जिसे जिसे सीता ने भरपूर निभाया। राम ने सीता को शस्त्र विद्या सिखाया एवं अपनी आत्म रक्षा करने के लिए और दुश्मनों के साथ लड़ने के लिए सक्षम बनाया। राम – रावण युद्ध के पश्चात जब वह सीता से मिलते हैं तो उनसे अग्नी परीक्षा की माँग भी नहीं रखते। सीता के प्रति उनके हृदय में जो प्रेम और विश्वास था वह अंत तक बन रहे।

अमीश जी के राम जब पहली बार सीता को देखते है तब वह न्याय के पक्ष से लड़ रही थी। यह देखकर राम का सिर आदर से झुक जाता है। सीता में राम तभी एक जीवनसाथी को देख लेते हैं। अपनी पत्नी के देश को रावण के आक्रमण से बचाने के लिए असुरास्त्र की प्रयोग करने से मिलने वाली दंड के बारे में पता होने पर भी वह पीछे नहीं हटते। दोनों ही विष्णु के पद के लिए चुने गए व्यक्ति थे जो भारत के भविष्य थी किंतु दोनों को उस पद का लालच नहीं होता। वह इस पद के लिए एक दूसरे का समर्थन करते हैं। राम के हृदय में सीता इसलिए सीता के प्रति अपार प्रेम थी और सीता के साथ वियोग में राम बहुत पीड़ाओं से गुज़रते हैं।

कोहली जी के अभ्युदय और अमीश जी के रामचंद्र श्रृंखला के राम अपनी पत्नी से अग्नी परीक्षा नहीं कराते। एक वर्ष से अधिक अलग रहकर युद्ध के पश्चात जब उनकी मिलन होता है तो इनके बीच दूसरे के लिए महसूस कर रही प्रेम की कोई सीमा नहीं होता। राम और सीता की मिलन का काफी संवेदनात्मक चित्रण दोनों राम कथाओं में हुआ है।

5.1.2.2.2 रावण और मंदोदरी

मंदोदरी एक ऐसी पत्नी थी जिसे अपने पति के अधर्मों के ज्ञात होते हुए भी उनका मार्गदर्शन करने में असफल रही। वह एक ऐसी प्रताड़ित पात्र है जिससे सभी को सहानुभूति होती है। रावण ने उससे कभी प्रेम नहीं किया लंका की रानी और इंद्रजीत की माँ की दर्जा उसके लिए केवल एक अलंकार था। सही अर्थ में उसे कभी खुशी महसूस नहीं हुई।

अभ्युदय में मंदोदरी राक्षस कुल में जन्मी एक स्त्री थी जिसे अपनी पति के दुर्व्यवहारों से काफी खेद थी। कन्याओं के अपहरण वह कभी स्वीकार नहीं कर पायी। उसने सीता के अपहरण का भी समर्थन नहीं किया। मंदोदरी की प्रतिक्रिया रावण को अपने परिवार के विरोधी पक्ष में होने का डर पैदा किया और सीता को अशोक वन में रखने का निर्णय लिया। इस प्रकार मंदोदरी की शर्त ने सीता को एक साल की अवधि प्रदान की। मंदोदरी अपने पति से प्रेम प्राप्त न होने के कारण दुखी थी और सीता को देखकर वह और दुखी हो जाती है। सीता एक युवा कन्या थी और असाधारण रूप से सुंदरी थी। अपनी पति की प्रेम के लिए तरसती एक बेबस स्त्री के रूप में कोहली जी ने मंदोदरी का चित्रण किया है।

अमीश त्रिपाठी की रामचंद्र श्रृंखला में भी मंदोदरी का भाग्य में कोई परिवर्तन नहीं है। रावण के हृदय में सदैव एक ही स्त्री की पूजा हुई है और वह है वेदवती। अपने पति के हृदय में दूसरी स्त्री की वास ने वेदवती को हमेशा चिंतित किया, किंतु वह अन्य राम कथा के मंदोदरी की तरह रावण के समक्ष अपनी कमज़ोरी नहीं दिखाई। रावण के साथ रहकर वह उनसे घृणा करने लगती है। 'लंका की युद्ध' के अंत में रावण की मृत्यु के लिए कामना करती मंदोदरी हमें देखने को मिलता है।

दोनों लेखकों के राम कथा श्रृंखला में हम यह देख सकते हैं कि रावण और मंदोदरी के बीच प्रेम की अभाव हमेशा थी। कोहली जी के रावण युवा कन्याओं की अपहरण करने में व्यस्त थे तो अमीश जी के रावण के हृदय में कोई और ही थी। पति से जब पत्नी को प्रेम नसीब नहीं होती तो या तो वह अपने भाग्य को कोसती हुई अपना जीवन काटती है या

वह प्रतिशोध की आग में जलती है । कोहली जी और अमीश जी ने मंदोदरी की इस दयनीय अवस्था को दोनों दृष्टिकोण से देखा है । मंदोदरी एक ऐसी नारी की प्रतिनित्व करती है जिसे सब कुछ मिलने पर भी कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। एक देश की रानी होने के बावजूद उसका जीवन किसी दासी से काम नहीं था। मंदोदरी की मानसिक संघर्ष को दोनों लेखकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से सफलता से चित्रित किया है ।

5.1.2.2.3 दशरथ और कैकेयी

वाल्मीकि रामायण में दशरथ के तीन रानियोँ में कैकेयी, उनके सबसे प्रिय थी। उसकी रूप सौंदर्य, युद्ध कौशलता और अपनी पति के प्रति उसकी प्रतिबद्धता ने दशरथ के हृदय में कैकेयी को विशेष स्थान दिलाया। दशरथ के सबसे प्रिय पुत्र राम थे किंतु जेष्ठ पुत्र की माँ होने पर भी को कौशल्या कभी वह स्थान नहीं मिला जो कैकेयी को प्राप्त थी।

अभ्युदय में कैकेय की पर आक्रमण करने के बाद दशरथ कैकेयी को भी राजमहल लेकर जाते हैं किंतु कैकेयी दशरथ से यह वचन लेकर आती है कि उसका पुत्र अयोध्या का युवराज बनेगा। दशरथ कैकेयी की रूप सौंदर्य में इतने आसक्त हो गए थे कि उसकी हर शर्त मानने को वह तैयार थे। उन्होंने इस शर्त को स्वीकारने के परिणाम के बारे में नहीं सोचा। कैकेयी के संबंध में कोहली जी का कथन इस प्रकार है ।

"कैकेयी अयोध्या में आई और सबने उसे देखा। वह सुदूर केकय देश के उन्मुक्त आयों की पुत्री थी। वह मानव-वंश की स्त्री-विरोधी मर्यादाओं से अनजान, स्वच्छंद वातावरण में पली राजकुमारी थी। जब दशरथ युद्ध में जाते तो वह कौशल्या के समान घर पर बैठ भगवान विष्णु के सम्मुख अपने पति की रक्षा की प्रार्थना नहीं करती थी, वह युद्ध की बात सुनते ही कवच पहन पति के साथ चलने को तैयार हो जाती थी। कैकेयी युद्ध में जा सकती थी, धनुष-बाण का प्रयोग जानती थी, खड्ग चला सकती थी और कोशल के अच्छे-से-अच्छे सारथी से रथ-संचालन की कुशलता में होड़ ले सकती थी...शंबर के साथ हुए युद्ध में भी वह साथ गई थी। जब वह घायल सम्राट् को लेकर वापस अयोध्या लौटी तो अयोध्या के जन-जन के मुख पर यही था कि यदि कैकेयी न होती तो सम्राट के प्राण न बच पाते।"[4]

शंभर के युद्ध के दौरान दशरथ के जान बचाने से मिली दो वचन को और जब वह राम को चौदह वर्ष वन भेजने और भरत के राज्याभिषेक के लिए उपयोग करती है, तभी दशरथ का सामना कैकेयी की शातिर रूप से होता है । अपनी पत्नी के रूप सौंदर्य में वे

[4] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स 31

इतने अंधे हो गए थे कि उन्हें कभी कैकेयी के असली रूप नज़र नहीं आया। वे भले कैकेयी और उसका भाई युद्धाजीत से डर के राम की राज्याभिषेक करने का प्रयत्न करते है, वह इस बात का अंदाजा नहीं लगा सके कि अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए कैकेयी कितनी कठोर हो सकती थी। अपनी ज़िम्मेदारियाँ को भुला के एक युवा कन्या के रूप सौंदर्य में आकर्षित होने का दंड उन्हें पुत्र से वियोग के रूप में मिलता है।

दशरथ के राम के प्रति जो विरोधी भाव था उसको कैकेयी ने सदैव भड़काया है। यौवन में दशरथ ने कैकेयी से अत्यंत प्रेम किया था। वह जैसे बूढ़ा होते गए उन्हें कैकेयी की इरादे साफ नज़र आने लगे। कैकेयी की अवसरवादी चरित्र का पूर्ण ज्ञान होने के कारण ही कैकेयी की भावनात्मक धमकियों का उन पर कोई असर नहीं होता। कैकेयी की चरित्र के संबंध में पूर्ण ज्ञान होने के कारण उसकी दो माँग से दशरथ नहीं चौंकते। वह कैकेयी से क्रोधित ज़रूर होते हैं किंतु उसकी दोनों शर्तों को स्वीकार करके पुत्र वियोग में अपनी अंतिम दिन व्यतीत करना ही उनके भाग्य में लिखा था।

"कैकेयी आगे बढ़कर फुफकारी, 'यह राम और भरत की बात नहीं है। बात राम और मेरी है । आपको राम और मुझमें से किसी एक को चुनना होगा। उसने आपके लिए किया ही क्या है? उसने सिर्फ एक बार आपका जीवन बचाया है। बस इतना ही। मैंने हर रोज़ आपको बचाया है, पिछले कई सालों से! क्या मेरे त्याग नगण्य हैं?

दशरथ भावनात्मक धमकी में आने वाले नहीं थे।

कैकेयी तिरस्कारपूर्वक हंसी। 'बेशक! जब आपके पास तर्क के लिए कुछ नहीं बचता, तो आप ख़ामोश हो जाते हैं!'

'मेरे पास जवाब है, लेकिन तुम्हें वह पसंद नहीं आएगा।"[5]

दोनो राम कथा श्रृंखला में दशरथ को कैकेयी के प्रति गहरा प्रेम था। उसकी सुंदरता और प्रतिभा दोनों की वे प्रशंसा करते है। वह दशरथ के प्रिय पुत्र राम से उन्हे अलग कर के उनके निधन की उत्प्रेरक बन जाती है जिसके कारण उन्हें अंतिम दिनों में अत्यधिक पीड़ा हुई। हालाँकि वह राम के चौदह साल के वनवास का प्रत्यक्ष कारण नहीं थीं, लेकिन उन्होंने परोक्ष रूप से कोहली जी की 'अभ्युदय' में विश्वामित्र से की राम के वचन को निभाने और अमीश जी की राम चंद्र श्रृंखला में असुरस्त्र का उपयोग करने के लिए मिली सज़ा को पूर्ण करने में कैकेयी की माँग एक वजह बनी।

[5] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 285

5.1.2.3 भातृ प्रेम

रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जो भातृ प्रेम के लिए प्रसिद्ध है । रामायण में राम और उनकी तीन भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के बीच गहरे प्रेम और बंधन को दर्शाया गया है । इन चारों भाइयों को प्रेम, सम्मान और भक्ति के प्रतीक के रूप में देखा जाता है । इसके अतिरिक्त रावण और उनके भाइयों, कुंभकरर्ण और विभीषण की अनोखी रिश्ते को भी दर्शाया गया है ।

5.1.2.3.1 राम और लक्ष्मण

राम और लक्ष्मण के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध थे। महल की सुख सुविधाओं को त्याग कर लक्ष्मण स्वेच्छा से राम और सीता के साथ वनवास जाता है । उसने अटूट समर्पण के साथ पूरे जीवन राम की सेवा की और हर चुनौतियों में राम का साथ निभाया। राम और लक्ष्मण के भातृ प्रेम आज भी एक मिसाल बनकर भारतीयों के हृदय में जीवित है ।

अभ्युदय की लक्ष्मण विवाहित नहीं था। वह अपने जीवन अपने भैया और भाभी के लिए समर्पित कर चुका था। चौदह साल के निवास के दौरान एक अंगरक्षक की तरह राम और सीता की वह सुरक्षा करता रहा। राम के आदर्शों को उसने सदैव अपना आदर्श माना। लक्ष्मण अपने भाई पर पूर्ण विश्वास करता था। इस श्रृंखला में हमें लक्ष्मण की राम के प्रति निस्वार्थ सेवा और समर्पण का चित्रण देखने को मिलता है। बड़े भाई और भाभी की सुख के लिए आराम को त्याग करने का उसकी मानो भाव एक केंद्रीय विषय है जो उनकी भातृ प्रेम की ताकत को दिखाता है । अतः कोहली जी की राम कथा श्रृंखला में रामायण महाकाव्य के अन्य रूपांतरणों की तरह राम और लक्ष्मण के बीच गहरे रिश्ते और को दर्शाती है जो रामायण की कथा का एक महत्वपूर्ण पहलू है ।

अमीश त्रिपाठी की रामचंद्र श्रृंखला में लक्ष्मण और राम के रिश्ते को बिल्कुल उसी प्रकार दिखाया है जिस प्रकार अभ्युदय में लिखा है । इस श्रृंखला में राम और लक्ष्मण के रिश्ते को सौहार्द, आपसी सम्मान एवं कर्तव्य की भावना की मिश्रण के रूप में दर्शाया गया है । इस कथा में उनके गुरुकुल जीवन, उनके पालन पोषण और प्रशिक्षण पर प्रकाश डाला है और उनके मूल्यों से युक्त प्रकृति पर ज़ोर दिया है । न्याय और धार्मिकता के प्रति राम के अटूट प्रतिबद्धा और राम के प्रति लक्ष्मण की निष्ठा इस श्रृंखला की मुख्य विषयों में से एक है ।

राम और लक्ष्मण की रिश्ता भारतियों के लिए भातृ प्रेम का अहम उदाहरण है । यह महाकाव्य सदियों पुरानी होने के बावजूद भातृ प्रेम कि यह दास्ताँ आज भी उतने ही

प्रासंगिक है जितने पहले था। दोनों लेखकों ने राम और लक्ष्मण के इस गहरी संबंध को वाल्मिकीय रामायण के अनुसार ही देखा है। यह ज़रूर है कि उनके रिश्ते की गहराई को दिखाने के लिए दोनों लेखकों ने कई मार्मिक प्रसंगों को अपनी राम कथा में जोड़ा है।

5.1.2.3.2 राम और भरत

वाल्मीकि रामायण में राम और भारत के रिश्ते एक प्रमुख तत्व है। भरत राम के साथ राक्षसों से लड़ने नहीं गया था और न ही चौदह वर्ष की वनवास में राम के साथ था, किंतु भरत के हृदय में राम के प्रति प्रेम और भक्ति उतनी ही थी जितनी लक्ष्मण को था। कैकेयी जैसी शातिर माँ के पुत्र होने पर भी भरत के हृदय में किसी प्रकार की लालच नहीं था। राम के अनुपस्थिति में भी भरत ने कभी अयोध्या के सिंहासन पर नहीं बैठा। अपने भाई की पादुकाएँ सिंहासन पर रखकर महल के ऐशो-आराम को त्याग कर नंदीग्राम नामक गाँव में सन्यासी जैसा जीवन व्यतीत किया और वही रह कर अयोध्या का शासन कार्य संभाला। राम भी भरत से बहुत प्रेम करते थे और उसका आदर करते थे। उन्होंने भरत की भक्ति और निष्ठता की सदैव सराहना किया। राम और भरत, अयोध्या की सिंहासन के लिए प्रतिस्पर्धा कभी भी उनके बीच आने नहीं दिया। जायदाद के लिए एक दूसरे की हत्या भी करने वाले कलि युग के भाइयों से वह बहुत भिन्न थे।

अभ्युदय में राम और भरत के रिश्ते की मूल तत्वों को दर्शाया गया है, किंतु उनके रिश्ते के चित्रण कोहली जी की संस्करण में अत्यधिक व्याख्याएँ और बारीकियों के साथ प्रस्तुत किया है। भरत को जब राम की वनवास का खबर मिलता है तो वह सेना को लेकर राम से मिलने वन में जाता है किंतु भरत की सेना के साथ आगमन का खबर राम और लक्ष्मण को संदेह में डालता है कि वह उनसे युद्ध करने आ रहे थे। यहाँ भरत की इरादों पर शक करने वाले राम के चरित्र हमें देखने को मिलता है।

"भरत लौट आए हैं । उन्होंने अपने अभिषेक का विरोध किया है और आपको मनाकर वापस अयोध्या ले जाने के संकल्प की घोषणा की है। किंतु...

"किंतु क्या?" लक्ष्मण बोले। "उन्होंने सेना को प्रस्तुत होने का आदेश दिया है। वे चतुरंगिणी सेना के साथ आपको मनाने आएँगे!" चेतन के मुख पर एक वक्र मुस्कान थी। "धोखा!" लक्ष्मण बोले, "मनाने के नाम पर सैनिक अभियान।" "अभी चलकर सब लोग सो रहो।" राम बोले, "शेष बातें कल होंगी।" राम अपनी कुटिया में चले आए, पीछे-पीछे सीता आईं।

"क्या सोच रहे हैं आप?" सीता उत्कंठित हो राम की ओर देख रही थीं। "निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता।" राम स्थिर वाणी में बोले, "सौमित्र की आशंका भी ठीक हो सकती है; और भरत की घोषणा भी सत्य हो सकती है!"[6]

यहाँ राम के अंदर के नेतृत्व का भाव उनकी भातृ प्रेम में हावी होते हुए हम देख सकते हैं । राम किसी संदेह की गुंजाइश नहीं रखना चाहते। वह हर स्थिति में अपने आसपास के लोगों की सुरक्षा को महत्व देते हैं । एक राजा के रूप में राम की प्रकृति को कोहली जी ने यहाँ दर्शाने का प्रयत्न किया है ।

अमीश त्रिपाठी की रामचंद्र श्रृंखला में भरत बहुत अहम भूमिका निभाता है । मूल रामायण की तरह ही राम और भरत का घनिष्ठ संबंध हैं । लेखक द्वारा ली गई रचनात्मक स्वतंत्रता के कारण उनके संबंध की सटीक गतिशीलता और घटनाएँ पारंपरिक रामायण से भिन्न है । इसमें भरत, राम लक्ष्मण और सीता के वनवास के लिए निकलते समय अयोध्या में उपस्थित था। इसके कारण भरत का राम का वन वापस बुलाने के लिए जाने वाले प्रसंग उल्लेखित नहीं है । राम – रावण युद्ध के समय राम के साथ वह युद्ध में भाग लेता है और रावण का पुत्र इंद्रजीत की मृत्यु भरत के हाथ होता है । इसीलिए मूल रामायण की तुलना में भरत का अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला में अहम भूमिका है । अमीश त्रिपाठी के भरत ने सबसे अहम घड़ी में राम का साथ दिया जिसके कारण लंका का युद्ध जीतने में उनके लिए और अधिक आसान हो गये थे ।

जब राम युद्ध किए बिना ही सीता को लंका से वापस लेकर आने का योजना बनाया तो भरत को लगता है कि यह अभियान सफल नहीं होगा। भरत के इस अनुमान जब राम क्रोधित होते हैं तो नारद उनसे कहते है कि – "एक अच्छा भाई अपने बड़े भाई के आदेशों का अंधानुकरण नहीं करता,' नारद ने कहा। 'वो वही करेगा जिसमें उसे अपने भाई का सर्वश्रेष्ठ हित दिखेगा, भले ही इसका अर्थ उसकी अवज्ञा करना हो।"[7]

इस प्रकार अमीश जी ने राम और भरत के रिश्ते में प्रेम और सम्मान के साथ-साथ एक दूसरे के गलतियों पर सवाल करने का हक भी रखते हैं ।

राम की अनुपस्थिति में उनकी पादुकाओं को सिंहासन में रखकर अयोध्या के शासनकार्य को निभाने वाले भरत का चित्रण दोनों लेखकों ने किया है । राम की प्रति भरत की निष्ठता प्रशांसनीय है क्योंकि अयोध्या जैसे बड़े राज्य के राजा बनने के अवसर

[6] नरेन्द्र कोहली – अवसर – पृ. स 150
[7] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ. स – 38

को उसने अपने भाई से बढ़कर नहीं समझा। कैकेयी जैसी स्वार्थी माँ की परवरिश में पलने पर भी उसमें राम का ही संस्कृति है । राम और भरत का यह रिश्ता उतनी ही पवित्र है एवं गहरा है जितना राम – लक्ष्मण का है ।

5.1.2.3.3 रावण और कुंभकर्ण

रावण और कुंभकर्ण ब्रह्मा को प्रसाद करने के लिए तप करते हैं । जब ब्रह्मा जी प्रसन्न हो जाते हैं तो उनसे उनकी इच्छा पूछते हैं । कुंभकर्ण ने इंद्रासन की माँग करने की बजाय निद्रासन का अनुरोध किया। ऐसा कहा जाता है कि देवी सरस्वती ने माया से कुंभकर्ण से ऐसा कहलाया, इसीलिए कुंभकर्ण एक वर्ष की छः महीने सोता रहता है और जब जाग जाता है तो वह छः महीनों तक भोजन करता है । राम – रावण युद्ध में जब रावण को ऐसा लगा कि वह हारने वाले हैं, तो उन्होंने अपने भाई कुंभकर्ण को जगाने का फैसला किया। कुंभकर्ण को यह पता होता है कि राम के साथ इस युद्ध में जीतना कठिन है किंतु अपने भाई के प्रति प्रेम और आस्था के कारण वह लड़ता है और युद्ध में हार जाता है । कुंभकर्ण अपने भाई के प्रति अंतिम साँस तक निष्ठावान रहे।

नरेंद्र कोहली के राम कथा में अपने भाई की बुरी आदतों को बढ़ावा देते हुई एक बड़े भाई के रूप में रावण का चित्रण हुआ है । विभीषण का मानना है "रावण ने कुंभकर्ण को रोका न भी होता; किंतु उसके मदिरापान के लिए इतनी सुविधाएँ उपलब्ध न कराई होतीं, तो क्या कुंभकर्ण की यह अवस्था होती।"[8] कोहली जी ने रावण को एक ऐसे भाई के रूप में चित्रण किया है जिसने कुंभकर्ण का संपूर्ण जीवन को नष्ट किया है और अंत में उसे मौत के मुँह में धकेल दिया।

अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला में रावण और कुंभकर्ण के रिश्ते में उतनी ही प्रेम और सम्मान हम देख सकते हैं जितने कि राम और उनके भाइयों के बीच थे । अमीश जी ने भातृ प्रेम को अपनी उपन्यासों में बड़ी महत्व दिया है । कुंभकर्ण का जब जन्म हुआ तब रावण को अपने भाई की सुरक्षा करने के लिए अत्यंत साहस करना पड़ा। उन्होंने अपनी जान पर खेल कर कुंभकर्ण की रक्षा की। जब मिथिला के युद्ध के बीच रावण पर वार हुआ तो कुंभकर्ण रावण को बचाने के लिए असुरास्त्र के सामने खड़ा हुआ और बहुत बुरी तरह से घायल हो गया था। अंत में जब राम और रावण के बीच युद्ध शुरू होता है तब रावण के कई बार मना करने के बावजूद भी कुंभकर्ण युद्ध में भाग लेता है और उसकी मृत्यु हो जाती

[8] नरेन्द्र कोहली – युद्ध 2 – पृ 66

है । रावण और कुंभकर्ण के रिश्ते का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है जो पाठकों के आँखों में आँसू लाता है ।

"रावण ने गहरी साँस ली। "तुम कुछ अधिक ही भले हो, कुम्भ।"
कुम्भ चुप रहा।
रावण ने हार मानते हुए अपनी बाँहें फेंकीं। "ठीक है, ठीक है! सिगिरिया वापस पहुँचने पर मैं उनसे मिलूँगा।"
कुम्भकर्ण मुस्कुराया। "यह है ना मेरा बच्चा।"
"क्या कहा!" रावण ने सीधे होते हुए कहा। " मतलब है तुम्हारा? भूलो मत कि मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ।" 'बच्चे' से क्या
"हाँ, हाँ, " कुम्भकर्ण ने हँसते हुए कहा।
रावण भी मुस्कुरा दिया। "मैं तुम्हें बहुत छूट देता हूँ।"
"वो इसलिए कि आप मेरे बिना काम नहीं चला सकते।"[9]

दोनों लेखकों ने रावण और कुंभकर्ण के रिश्ते को अलग नज़र से देखा है । कोहली जी के लिए रावण एक ऐसा भाई था जिसने अपने भाई की बुरी आदतों को बढ़ावा देकर उसकी जीवन को नष्ट किया वहीं दूसरी तरफ अमीश जी की उपन्यास में रावण और कुंभकर्ण एक दूसरे से अपनी जान से भी अधिक प्रेम करते थे। जब कोहली जी की दृष्टिकोण वाल्मीकि रामायण से अधिक निकट है वहीं दूसरी तरफ अमीश जी ने भातृ प्रेम को महत्व देते हुए खलनायक रावण के अंदर भी मानवीय संवेदनाओं का चित्रण किया ताकि रावण मनुष्य के ओर निकट आए।

5.1.2.3.4 रावण और विभीषण

लंका के राजा रावण का छोटा भाई विभीषण जन्म से ही असुर होने पर भी उसमें अपने पिताजी की संस्कृति थी जो एक ब्राह्मण थे। नेक हृदय वाले विभीषण रावण से सीता को वापस करने का सुझाव देता है जो रावण मन करता है । धर्म की रक्षा के लिए विभीषण अपने भाई से मुँह मोड़ लेता है और युद्ध में राम के पक्ष में रहता है । विभीषण अपने भाई के प्रति कर्तव्य छोड़कर अपने देश के प्रति कर्तव्य को चुना।

अभ्युदय में विभीषण और रावण का रिश्ता, वाल्मीकि रामायण से काफी अंतर नहीं रखता। विभीषण रावण के हर गलत कार्यों को ठोकता है और उसको सही मार्गदर्शन

[9] अमीश त्रिपाठी – रावण आर्यवर्त का शत्रु – पृ स – 244

देने का प्रयत्न करता है । अंत में उसे लंका की प्रजा की सुरक्षा के लिए उसे राम के पक्ष में जुड़ना पड़ता है । एक भाई से अधिक वह एक देश स्नेही था और अपनी प्रजा से बेहद प्रेम करता था।

अमीश जी की राम कथा श्रृंखला में विभीषण एक ऐसा बुद्धू भाई था जिससे रावण घृणा करते हैं । अपने ही पिता के खून होने के बावजूद रावण ने उसे कभी स्वीकार नहीं किया। अमीश जी का विभीषण एक खुदगर्ज़ इंसान था जिसे अपने परिवार के अतिरिक्त किसी से अपनापन नहीं था। जब लंका में महामारी फैल रही थी तो उसके लिए कारण बनी पानी में मिश्रित ज़हरीले पदार्थ के बारे में उसने किसी को अवगत नहीं कराया। रावण को हरा के लंका का सिंहासन हासिल करना ही उसका लक्ष्य था जिसके कारण स्वास्थ्य को बिगाड़ना वाले इस विष के बारे में खामोश रहना ही उसने सही समझा। विभीषण को केवल रावण की सिंहासन से प्रेम था। रावण की रहस्य सुर्ग के बारे में वह राम की सेना को बता कर लंका के साथ विश्वास घात करता है । अंत में रावण राम से वचन लेते हैं कि वह विभीषण को लंका की सिंहासन पर विराजमान होने नहीं देंगे। एक पिता के पुत्र होने पर भी रावण और विभीषण के बीच प्रेम नहीं थे। वह दोनों जीवन भर एक दूसरे से घृणा करते रहे।

रावण के हृदय में दोनों राम कथा श्रृंखला में विभीषण के प्रति प्रेम नहीं थे। विभीषण रावण के लिए आँखों का काँटा था। कोहली जी का विभीषण के हृदय में भाई के प्रति प्रेम ज़रूर थे पर अधर्म के साथ देने के लिए वह तैयार नहीं था। अमीश जी का विभीषण एक ऐसा व्यक्ति था जिसे सिर्फ लंका के सिंहासन से मोह थी। वह एक ऐसा इंसान था जिसने अपने भाई को धोखा देकर राम के पक्ष में प्रजा के लिए नहीं बल्कि अपनी स्वार्थ के लिए गया। कोहली जी की विभीषण को रावण से प्रेम ज़रूर था किंतु उसने अपने धर्म को चुना और अमीश जी के विभीषण को रावण से किसी प्रकार के प्रेम नहीं था और वह अपने लालच को चुना। दोनों के विभीषण के लिए राम के पक्ष में जाने का अलग ही कारण था।

5.1.2.3.5 बालि और सुग्रीव

किष्किंधा का राजा बालि एक गलतफहमी के कारण सुग्रीव को मारने का निर्णय लेते हैं । बालि के डर से सुग्रीव एक पर्वत में जाकर छुप कर बैठता है । बालि और सुग्रीव के बीच एक दूसरे पर भरोसा या प्रेम कभी नहीं था। बिना सुग्रीव के पक्ष सुने बालि ने न सिर्फ सुग्रीव के साथ लड़ा, वह सुग्रीव की पत्नी के साथ भी दुर्व्यवहार किया। अंत में

सुग्रीव राम से मिलकर बालि को मारने की योजना बनाता है। वाल्मिकी रामायण में इन दोनों पात्रों के बीच हमें भातृ प्रेम देखने को नहीं मिलते।

अभ्युदय में बालि बुरी संगत में जुड़के गलत रास्ते पर चला जाता है। मदिरा की नशा में धुत बालि अपनी ज़िम्मेदारियों को भुलाता है। सुग्रीव एक भले व्यक्ति थे जिसे अपने देश और देशवासियों की चिंता थी। अपने भाई से उसे लगाव था। एक वर्ष की अवधि के बाद जब बालि वापस लौटके आता है, जिसे सब ने मरा हुआ समझ रखा था, सुग्रीव को सिंहासन में देखकर क्रोधित हो जाता है। उसकी आक्रोश का सुग्रीव शिकार बन जाता है। बाली सुग्रीव के समर्थक, उसकी पत्नी, बंधु-मित्र सभी को हानि पहुँचाता है और अंत में आदि रामायण में जिस प्रकार उल्लेखित है उसी प्रकार बालि का अंत हो जाता है। यहाँ सुग्रीव एक अच्छा भाई ज़रूर था किंतु बालि न एक अच्छे भाई था और ना ही एक अच्छे शासक।

अमीश जी की राम कथा श्रृंखला में बालि और सुग्रीव के रिश्ते में कडवाहट बालि के कथन से स्पष्ट होता है – "मैंने सुना है कि वो सुग्रीव भी यहां है-वो अकर्मण्य भाई जो मेरा अभिशाप है। उस मूर्ख से कहना कि आकर देखे कि दो असली पुरुष कैसे लड़ते हैं।"[10] असल में बालि के पुत्र अंगद नियोग रीति से जन्म लिए पुत्र थे। बालि पिता बनने में असमर्थ थे जिसका कारण सुग्रीव था। सुग्रीव को बचाते वक्त वह बुरी तरह से घायल हो जाता है। उस वक्त लगी घाव भरने के लिए ली गयी औषधियों के दुष्प्रभाव से बालि संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हो जाता है। बाली और सुग्रीव की माँ अरुणि यह सुनिश्चित करना चाहती थी की संतान उनके वंश का ही हो इसीलिए नियोग रीति किसी ऋषि के साथ नहीं बल्कि सुग्रीव के साथ हुआ था। बालि सुग्रीव से जीवन भर घृणा करते रहे और राम के साथ हुई द्वंद युद्ध में परास्त होकर मृत्यु धारण कर लेता है। जीवन भर एक असत्य के साथ जिए बालि उससे मुक्ति चाहता था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के साथ द्वंद युद्ध में लड़कर मरना ही उसे सबसे उचित महसूस हुआ। यहाँ हम देख सकते हैं कि अपने परिवार पर बोझ बनी मूर्ख भाई सुग्रीव की जान बचाने के लिए बालि अपनी जान को जोके में डालता है। आदि रामायण से पृथक बालि के हृदय में सुग्रीव के लिए प्रेम ज़रूर था। दोनों राम कथा में बालि की मृत्यु राम के हाथों होता है, जिसके कारण सुग्रीव बना। कोहली जी के रामायण में बाली और सुग्रीव एक दूसरे से प्रेम तो था किंतु जब उन्हें एहसास होने लगता है कि दूसरे ने उन्हें धोखा दिया तो वह प्रेम घृणा में बदल गया। यहाँ उनके जीवन स्थितियों ने उन्हें ऐसा कदम उठाने पर मजबूर किया है। अपने भाई पर

[10] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ. स – 72

भरोसा न करने वाले कोहली जी के बाली और माँ की दबाव में आकर नियति रीति की हिस्सा बनी अमीश जी के सुग्रीव को उनके हालातों ने धोखा दिया है। दोनों ही ऐसे मोड़ पर पहुँच गए थे जहाँ उन्हें सही और गलत के बीच अंतर समझ में नहीं आ रहे थे और इस आड़ में वे गलती कर बैठे।

5.1.2.4 रावण और शूर्पणका

रावण द्वारा सीता का अपहरण के कारणों में शूर्पणका एक अहम कड़ी बनती है। शूर्पणका के साथ हुई अपमान का बदला लेने के लिए ही रावण सीता का अपहरण करने का निर्णय लेता है।

अभ्युदय में रावण शूर्पणखा के पति विद्युजिन्ह की हत्या करता है जिसके कारण शूर्पणखा एक अधम नारी बन जाती है । अपने पति के कातिल रावण के प्रति शूर्पणका को किसी प्रकार के प्रेम नहीं थी। जिस प्रकार रावण ने उसकी परिवार उजाड़ दिया था शूर्पणका भी रावण के साथ वही करना चाहती थी। इसीलिए लक्ष्मण से चोट खाकर वापस लंका चली जाती है और रावण से सीता के रूप सौंदर्य का वर्णन करके रावण को लुभाती है। वह चाहती थी कि सीता राम से अलग हो ताकि उसे राम मिल जाए और सीता के कारण मंदोदरी और रावण के बीच दरार पड़े। रावण भी अपनी बहन के अपमान के लिए नहीं बल्कि सीता की सौंदर्य में मग्न उन्हें अपहरण करने का निर्णय लेता है। इन दोनों के बीच प्रेम नहीं बल्कि अपनी स्वार्थ इच्छाओं की पूर्ती के लिए एक दूसरे के फायदा उठाते हुए, हम देख सकते हैं।

अमीश त्रिपाठी की राम चंद्र श्रृंखला में हम देख सकते हैं कि रावण को अपनी बहन शूर्पणखा के प्रति किसी प्रकार के भातृ प्रेम नहीं थे। शूर्पणखा के साथ हुई अपमान को वह सिर्फ एक बहाना बनाते हैं ताकि वह मलयपुत्रों के विष्णु अर्थात सीता की अपहरण कर सके। शूर्पणखा अपने भाई विभीषण को लंका के सिंहासन में बैठते हुए देखना चाहती थी इसीलिए राम रावण युद्ध में रावण को हारते देख कर वह मन ही मन खुशी महसूस करती है।

दोनों राम कथाओं में न रावण को शूर्पणखा से प्रेम था और न ही शूर्पणखा को रावण से। कोहली जी की शूर्पणखा को रावण की आवश्यकता थी ताकि सीता की अपहरण से उसे राम मिल जाए और अमीश जी की शूर्पणखा को सिर के ऊपर छत की ज़रूरत थी जिसके कारण अपने सौतेले भाई के साथ लंका में रहना उसकी आवश्यकता थी।

5.1.2.5 सीता और ऊर्मिला

सीता और उर्मिला रामायण के दो सशक्त नारी पात्र है जो बहने थी। उर्मिला जनक की अपनी पुत्री थी और सही मायनों में मिथिला की राजकुमारी थी किंतु उसे कभी भी अपनी बड़ी बहन से अपनी स्थान छिन जाने की शिकायत नहीं थी। उन दोनों के बीच अटूट प्रेम था। दोनों का विवाह अयोध्या के राजकुमारों से हो जाता है । वनवास के समय उर्मिला को अपनी बहन और अपने पति दोनों से चौदह वर्ष दूर रहना पड़ती है । सीता और उर्मिला के पति के प्रति प्रेम और विश्वास का हर कदम परीक्षा हुआ है ।

अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला में सीता उर्मिला की जीवन में एक बड़ी बहन के साथ एक माँ की किरदार भी निभाती है । उर्मिला आठ साल की थी जब सुनैना की मृत्यु हुई थी। तब देश के साथ साथ बहन की ज़िम्मेदारी भी सीता पर आ जाती है । विवाह के पश्चात दोनों वापस अयोध्या जाते हैं और सीता, राम और लक्ष्मण के साथ वनवास पर जाती है । अभ्युदय में उर्मिला नामक पात्र का उल्लेख नहीं हुआ है । सीता जनक की इकलौती पुत्री है और लक्ष्मण विवाहित भी नहीं है ।

5.1.3 पात्र परिकल्पना

रामायण में पात्रों को गुण और दोषों के साथ जटिल रूप से चित्रित किया गया है । जबकि राम एक आदर्श इंसान और राजा का प्रतीक हैं, सीता को जंगल में छोड़ने का उनका निर्णय एक पति के रूप में उनकी भूमिका में अपूर्णता को दर्शाता है । रावण, एक विद्वान, शिव जी के भक्त जो संगीत विशेषज्ञै भी थे, जिसने जीवन भर राक्षसी प्रवृत्तियाँ की। खामियों से भरी इन पात्रों ने ही रामायण को एक उत्तम महाकाव्य बनाया है । आगे हम यह देखेंगे कि नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने अपनी राम कथा श्रृंखला में इन पात्रों को कैसे चित्रित किया।

5.1.3.1 राम

राम एक ऐसे मिथकीय पात्र है जो अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है । राम का जीवन हमें यह सिखाता है कि मनुष्य को अपने नैतिक कर्तव्य किस प्रकार निभाना चाहिए और अपनी मर्यादाओं को कठोरता से पालन करना चाहिए ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रहे। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है । रामायण को पूर्ण रूप समझने के लिए राम के चरित्र को समझने की आवश्यकता है । कहाँ जाता है की रामायण चार वेदों का एक मिश्रित रूप है ।

नरेन्द्र कोहली का राम एक युवक हैं जो विलासी राजा की उपेक्षित पुत्र हैं । उन्होंने विश्वामित्र के मार्गदर्शन में राक्षसों का वध करते हैं और जनकल्याण के लिए लड़ने का

संकल्प लेते। राम खान श्रमिकों को संगठित करके सैनिक बनाते हैं और उन्हें अन्याय के खिलाफ लड़ना सिखाते हैं । वे श्रमिकों की मुक्ति की रक्षा करना भी सिखाते हैं । अंत में उनकी सेना रावण को पराजित करते हैं । राम का सैनिकों के साथ गहरा संबंध होता है । वे उन्हें जनशक्ति की महत्वपूर्ण शक्ति मानते हैं ।

राम ने स्त्रियों को महत्वपूर्ण माना और उनकी सुरक्षा और सम्मान के लिए कई कदम उठाए। वे अहल्या का उद्धार करके समाज में उनको सम्मान दिलाया और सामाजिक मान्यता प्रदान की। उन्होंने जंगल में रहने वाली आदिवासी महिलाओं को शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वावलंबन, सभ्यता भावना को बढ़ावा दिया। उन्होंने मंती और सुधा जैसी महिलाओं को सामाजिक अधिकारों के लिए लड़ने और नेतृत्व करने की साहसिकता सिखाई। राम ने स्त्री–पुरुष के समान मानवाधिकार को महत्व दी और स्त्रियों को अपने सम्मान की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध किया।

राम लोगों में एक सामाजिक उद्देश्य और सामाजिक न्याय की भावना जगाते हैं । उन्होंने जनसमूह को उत्कृष्ट नेतृत्व दिया और अन्याय, शोषण, और असमानता पर आधारित व्यवस्थाओं के खिलाफ उठकर साम्यवादी समाज की ओर प्रोत्साहित किया। ऋषिवर्ग के प्रतिनिधित्व में विश्वामित्र, भारद्वाज, वाल्मीकि, और अगस्त्य ने राम को मानवता की रक्षा के लिए सर्वोत्कृष्ट नेता माना। राम ने मानवशक्ति का सहारा लेकर लंका तक यात्रा की और रावण का विनाश किया। उनके बाद, उन्होंने रावण के भाई विभीषण का राज्याभिषेक किया और उसे मानवता की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

राम एक ऐसा नेता हैं जो दासप्रथा और बंधुवा मज़दूर प्रथा के खिलाफ खडे हैं । वानरों, ऋक्षों, गिधों, भील और अन्य पिछड़ी जातियों को दास बनाने और अमानवीय व्यवहार करने वाले राक्षसों के खिलाफ खड़े होते हैं । राम इन दासों को उनके दु:ख से बाहर निकालते हैं और उनके साथ आधिकारिकता से व्यवहार करते हैं ।

अमीश त्रिपाठी की लेखन शैली हमें यह यकीन दिलाता है कि राम और सीता देवता नहीं बल्कि इंसान हैं जो अपने कर्मों के माध्यम से विष्णु या ईश्वर बन गए। यह राम कथा एक यात्रा है कि कैसे विष्णु अपने लोगों और समाज का मार्गदर्शन करने के लिए सही समय पर जन्म लिए और इनके अधीन यह परिवर्तित राज्य का कानून द्वारा शासित था और समानता पर आधारित था।

अमीश त्रिपाठी के राम, दशरथ और उनकी पहली पत्नी कौशल्या की संतान हैं जो अपने पिता की प्यार से तिरस्कृत हैं । उनका जन्म दशरथ की युद्ध में पराजय के दिन हुआ

था। राम को उनके भाइयों भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ ऋषि वशिष्ठ के आश्रम में रहने के लिए भेजा जाता है । वहाँ अपने समय के दौरान, वह कठोर प्रशिक्षण से गुज़रते हैं और एक कुशल योद्धा बनते हैं । वे उस आश्रम में रहकर भारत की चुनौतियों और उनसे निपटने के तरीके के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं ।

आश्रम में रहते हुए, राम जीवन के आदर्श तरीके के सिद्धांतों और जीवन जीने के लिए स्त्रैण और पौरुष दोनों दृष्टिकोणों के दर्शन के बारे में भी सीखते हैं । अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, राम को अयोध्या में कानून और व्यवस्था बनाए रखने का काम सौंपा जाता है, और वह इसमें उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं ।

राम का न्याय के प्रति दृष्टिकोण अयोध्या के अधिकांश निवासियों और भरत से भिन्न था। राम और उनके भाईयों के लिए मंथरा की बेटी रोशनी उनकी बहन जैसी थी। रोशनी के साथ बलात्कार होता है । मुख्य अपराधी धेनुका, एक नबालिग होने के कारण उसको मौत की सज़ा से बचा लिया गया, लेकिन सात अन्य बलात्कारियों को कानून के अनुसार मौत की सज़ा दी गई। राम इस बात पर अड़े थे कि लोगों को किसी भी कीमत पर कानून नहीं तोड़ना चाहिए। रोशनी के बलात्कार और हत्या के भयानक कृत्य पर तीव्र क्रोध होने के बावजूद उन्होंने कानून का पालन किया।

राम विवाह, स्त्री और एकपत्नीत्व पर आदर्शवादी और महान विचार रखते थे। वह महिलाओं की समानता में विश्वास रखते थे और उनकी मानसिक क्षमताओं का सम्मान करते थे। उनकी नेतृत्वकारी भूमिकाओं का समर्थन करते थे। राजनीतिक गठबंधन के लिए विवाह का उपयोग करने की प्रचलित परंपरा के विपरीत, उन्होंने विवाह को दो व्यक्तियों के बीच एक पवित्र बंधन माना और इसके आध्यात्मिक महत्व पर ज़ोर दिया। राम ने एकपत्नीत्व का समर्थन और बहुविवाह का विरोध किया क्योंकि उन्होंने इसे पुरुषों के पक्ष में महिलाओं के प्रति अन्याय माना। वह लिंग भेदभाव को अस्वीकार करते हुए जीवन भर एक महिला के प्रति निष्ठावान रहने की प्रतिज्ञा लेते है ।

अमीश त्रिपाठी के राम अपनी बुद्धिमत्ता और उल्लेखनीय भावनात्मक परिपक्वता के लिए प्रसिद्ध हैं, जो उनकी शाँत और संयमित आचरण की विशेषता है ।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने राम को एक साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है । पिता के प्रेम से तिरस्कृत एक साधारण राजकुमार जो अपनी काबिलियत पर मनुषय के लिए प्रेरक पात्र बने। लोगों के मन एवं समाज में खुद को प्रतिष्ठित करने के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के

राम एक आदर्श पुरुष हैं, जो एक आदर्श समाज के निर्माण का कारण बना। दोनों लेखकों ने राम को समकालीन समाज के लिए आवश्यक एक मार्गदर्शक के रूप में चित्रित किया है ।

5.1.3.2 सीता

सीता एक ऐसी पौराणिक पात्र है, जो सामूहिक चेतना में गहराई से समाई हुई है । भारतीय महिला के जीवन के हर चरण में उनका नाम जुड़ा हुआ है । हालाँकि समय के साथ, प्रचलित राजनीतिक और सांस्कृतिक मानदंडों के साथ तालमेल बिठाने के लिए उनके चरित्र के कुछ पहलुओं पर दूसरों की तुलना में अधिक ज़ोर दिया गया है । ऐसे में अक्सर सीता के गुणों के बजाय उनके चरित्र के नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है । समकालीन संस्कृति में, सीता का चरित्र हमें बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और जानकारी प्रदान करता है।

नरेंद्र कोहली जी ने राम कथा के मुख्य पात्र सीता को एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है । उनकी दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध – 1 और 2 में सीता की चरित्र में पूर्ण मानवीय गुण हम देख सकते हैं । उनकी सौंदर्य और अज्ञानकुलशीलता होने की बात दीक्षा में बार-बार उठाया गया हैं । विश्वामित्र कहते हैं कि "सीरध्वज ने यह नहीं सोचा था कि जब कन्या युवती होगी तो जाति-पांति, कुल-गोत्र और ऊंच-नीच की मान्यताओं में जकड़े इस समाज में उसके विवाह की समस्या कितनी जटिल होगी; और यह समस्या तब और भी जटिल हो जाएगी तब सीता रूपवती युवती होगी। आज सीता चमत्कारिक रूपवती युवती है, जिसके सौंदर्य की चर्चा सम्राटों के प्रासादों के भी बाहर, आर्यवर्त के बहुत परे तक राक्षसों देवताओं, गंधर्वों, किन्नरों, नागों आदि के राज महलों में भी हो रही है।"[11] "पुत्र इससे एक और जहाँ सीता जैसी गुणशीला, रूपवती युवती की जाति-विचार के पिशाचों के हाथों हत्या नहीं होगी और उसका विवाह अपने योग्य वर के साथ होगा।" [12]

सीता को राम के प्रति गहरा प्रेम है । इसी कारण सीता अपने पति की क्षमताओं को जानते हुए भी, लक्ष्मण को राम को ठूँठने के लिए भेजती है। वह चिंता करती है कि राम किसी हानि से गुज़र सकते हैं । जब रावण द्वारा उनका अपहरण हो जाता है, तो भी रावण कभी भी उसको अपनाने में सफल नहीं होते क्योंकि सीता का हृदय राम के प्रति अत्यंत प्रेम से भरा हुआ है।

---

[11] दीक्षा – नरेन्द्र कोहली – पृ. स 158
[12] दीक्षा – नरेन्द्र कोहली – पृ. स 159

"पूरी उपन्यास में सीता को राम की अनुचर के रूप में देख सकती है। अन्याय और भयानक शोषण के बीच रहने वाले वनवासियों को देखकर सीता के हृदय में उनके प्रति सहानुभूति जागता है । एक स्त्री खुद को तब पूर्ण महसूस करती हैं जब वह एक शिशु को जन्म देती है किंतु नरेंद्र कोहली की सीता लोक संगठन, शस्त्र संचालन, प्रशिक्षण, लोक शिक्षा आदि के कारण अपनी माँ बनने की इच्छा को दबाकर जीती है । यहाँ हमें सीता के भीतर एक आधुनिक नारी का रूप नज़र आती है । न्याय, समानता एवं अधिकारों के लिए राम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहने वाली सीता हमें इस उपन्यास देखने को मिलता है ।"[13]

सीता लोप मुद्रा से शल्य चिकित्सा का प्रशिक्षण प्राप्त करती है और वह एक प्रतिभावान चिकित्सक बन जाती है । वे खान के लोगों के उपचार और सेवा में लगी रहती थी। जब राम और लक्ष्मण अन्य ऋषिगण के साथ जन-जागरूकता अभियान में व्यस्त हो गए, सीता पिछड़ी जाति के बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को अक्षरों की विद्या प्रदान करती है । उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं और शिक्षा में उनकी रुचि बढ़ाते हैं ।

हम नरेंद्र कोहली की सीता में एक स्त्री में सुलभ देखने वाली कायरता भी देख सकते हैं । वे सीता को हर मानसिक भावना से पार करती हुई एक साधारण स्त्री के रूप में देखते हैं । जब राजा जनक सीता को वीर्य शुल्का घोषत कर देते हैं, तो सीता को विवाह से जुड़े कई प्रश्न मन में आते हैं । वह कई बार सोचती है कि कौन होगा जो उससे विवाह करेगा। राम की शक्ति और क्षमता को जानते हुए भी लक्ष्मण को राम के पीछे भला-बुरा कहकर भेजती है । जिससे उनका अपहरण हो जाती हैं । यहाँ तक कि अपहरण के बाद भी सीता अपनी साड़ी को गले में बाँधकर आत्महत्या करने की कोशिश करती है । रावण की चाल समझकर हनुमान पर भी वह विश्वास नहीं कर पाती।

अमीश जी की सीता को अपने आसपास के पुरुष पात्रों की प्रकृति में जो कमज़ोरियाँ है, उसके बीच एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन के रूप में दर्शाया गया है । उनके पिता, जनक, विद्वानों की गतिविधियों में लिप्त होकर अपने राजसी कर्तव्यों में असफल हो जाते हैं जबकि सप्तसिंधु के राजा दशरथ, अपने क्रोध और बहुविवाह के आगे झुक जाते हैं । राम दृढ़ता से अपनी विचारधारा का पालन करते हैं और भरत रचनात्मकता

[13] नीरजा. टी. के, डॉ. जी शांति - नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के दृष्टिकोण में सीता, केरल ज्योति - पृ. स 21

और स्वतंत्रता चाहते हैं । दूसरी ओर, सीता इन कमज़ोरियों को संतुलित करती है, व्यावहारिकता, कूटनीति और एक अलग दृष्टिकोण पेश करती है ।

सीता का पालन-पोषण, सुनैना द्वारा होता है, जो एक जिज्ञासु खोजकर्ता बन जाती है जो मानदंडों को तोड़ती है । वह विरोधियों को एकजुट करते हुए राम के साथ साझेदारी करती है । उनकी सामाजिक मुद्दों में तर्कसंगतता को रावण की तुलना में अधिक गंभीर है । वह व्यावहारिकता का प्रदर्शन करते हुए, राम की ज़िम्मेदारी से एक संपत्ति में बदल जाती है और एक शासक के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त करती है । पारंपरिक सीता से भिन्न एक शक्तिशाली, आत्म-जागरूक योद्धा के रूप में विकसित होती है जो अकेले रावण की सेना का सामना करने में भी सक्षम होती है ।

सीता सभी के साथ समान व्यवहार करती हैं । वह जटायु और अन्य नागाओं को बेझिझक स्वीकार कर लेती है जिनकी जाति समाज से बहिष्कृत हैं। वह उनके साथ इंसान की तरह प्रेम और आदर के साथ व्यवहार करती है । वह जटायु को बचाने के लिए अपनी सुरक्षा तक का बलिदान कर देती है । अमीश जी की सीता, वायुपुत्रों और मलयपुत्रों के लिए एक राजनीतिक उपकरण बनने से इनकार करता है, क्योंकि वह अपनी वास्तविकता और अपना उद्देश्य खोजने की कोशिश करती है और वह सीता ही हैं जो राम को संतुलन खोजने में मदद करती हैं ।

रामायण की पुनः लिखित संस्करणों में सीता की, भारतीय स्त्रीत्व की चेतना की ओर यात्रा हम देख सकते हैं। रामायण के प्रत्येक संस्करणों में सीता के चरित्र में परिवर्तन हमें देखने को मिलता है। सीता भारतीय नारियों के आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक है। सीता नामक पौराणिक पात्र सदैव शक्तिशाली थी। वह उनका चित्रण है जो उन्हें कमज़ोर यह मज़बूत दिखाता है। 1975 से 1978 तक लिखी गयी अभ्युदय में और 2015 से 2022 तक लिखी गयी रामचंद्र श्रृंखला में सीता की चरित्र में यह विकास हम देख सकते हैं। नरेंद्र कोहली की सीता उनके समय की भारतीय महिला की चरित्र का चित्रण है तो अमीश त्रिपाठी की सीता समकालीन समाज की महिला का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों अपने आप में एक सशक्त स्त्री की भूमिका निभाती है जो बुरी हालातों का डटकर सामना करती है।

5.1.3.3 रावण

रावण, एक ऐसा पौराणिक पात्र जो सदियों से भारतवासियों की ज़हन में डर का प्रतीक है । एक ऐसा खलनायक जिसकी पुतले को हर साल दशहरा में जलाने के बावजूद भी लोगों के दिल में इनके लिए घृणा कम नहीं हुई।

क्रोध, काम, लोभ, अनैतिकता एवं क्रूरता के लिए प्रसिद्ध असुर जो लंका के राजा हुआ करते थे। रावण का नाम सुनने पर जनता के मन में तुरंत एक दानव, लंका नरेश, बड़े योद्धा, दशानन, सीता का अपहरण करने वाला, शूरवीर और हनुमान जी के पूंछ में आग लगाने वाला आदि की छवी हमारे सामने आती है । रावण की बुराइयों और राम की हाथों उनकी अंत की कहानियाँ तो भारत की हर पीढ़ी जानते हैं, किंतु उनमें जो गुण थे उसकी उपेक्षा कर देते हैं । रावण एक पंडित थे। वेदों और शास्त्रों में उनका ज्ञान प्रशंसनीय था। तंत्र-मंत्रों में गहरी पकड़ थी। ज्योतिष के महारत रावण भोलेनाथ शिवजी के बहुत बड़े भक्त भी थे।

नरेंद्र कोहली का रावण एक शक्तिशाली और जाने-माने राजा थे जिन्होंने अपने बलशाली सैन्य के साथ आर्यावर्त के बाहर कई राजाओं को पराजित किया था। वे ब्रह्मा के प्रपौत्र थे और भगवान शिव के भक्त भी थे। रावण ने कुबेर पर आक्रमण किया था। उनके पास अद्वितीय शारीरिक शक्तियाँ थी जिससे उन्होंने अनेक राजाओं पर विजयी हासिल किया। अपनी बहन शूर्पणखा को क्षति पहुँचाने वाले राम और लक्षमण पर बदला लेने का लिए सीता का हरण करता है ।

रावण सीता को, राम को भुलाने के लिए एक वर्ष की अवधि देकर अशोक वाटिका में उन्हें बंदी बनाकर रखते हैं । यह मंदोदरी के कहने पर किया था। उसका पुत्र मेघनाथ, भाई विभीषण और मंदोदरी उसके विरोधी न बन जाए, यह सोचकर वह मंदोदरी की शर्त स्वीकार करता है । यह अपहरण की गई सीता के प्रति उसकी मर्यादा नहीं बल्कि अपने सभा और परिवार का उसकी विरोधी बनने का डर था।

रावण सिर्फ उन लोगों से प्रेम करता था जिससे उसको लाभ था। वह अपने पुत्रों में केवल मेघनाथ को चाहता था क्योंकि वह एक अपराजय योद्धा था। अन्य पुत्रों की मृत्यु पर वह आँसू तक नहीं बहाता। इस प्रकार अपनी शक्तिशाली भाई कुंभकर्ण जिससे उसे खतरा था उसे लंका की शासनकार्य से दूर रखने के लिए उसको मदिरा में डुबो दिया और शूर्पणखा के पति को मार दिया। विभीषण अपने भाई के बुरे कर्मों को ठोकता है जिसके कारण वह भी उसकी शत्रु बन जाता है । रावण चाहता था कि उसके कोई भी प्रतिद्वंद्वी उसके समक्ष सिर ना उठाएँ।

रावण की एक पत्नी होते हुए भी, वह अन्य स्त्रियों से आकर्षित था और उन्हें पाने के लिए युद्ध तक छेड़ देता था । रावण सीता के सौंदर्य से आकर्षित होकर सीता की समक्ष विवाह की प्रस्ताव भी रखता है । अपने बहन की सुहाग उजाड़नेवाले व्यक्ति को अनेक बार विवाह करते हुए हम देख सकते हैं । सीता के अपहरण लंका पर संकट था और यह

बात रावण को लोग समझाने का प्रयत्न भी करते हैं, किंतु वह सीता को वापस करने के लिए कभी तैयार नहीं होता। रावण की राक्षसी प्रवृत्तियाँ ऐसी थी जो क्षमा की लायक नहीं थी और उसकी यह चरित्र ही उसकी विनाश का कारण बना।

अमीश जी ने रावण जैसे खलनायक को अपनी उपन्यास रावण आर्यवर्त का शत्रु में एक राक्षस जैसे नहीं अपितु समाज से प्रताड़ित मानव के रूप में देखा है । "रावण आर्यवर्त का शत्रु में एक तस्कर से व्यापार एवं व्यापार से लंका के राजा बने रावण की गाथा है। अमीश जी ने रावण को एक व्यापारी के रूप में पेश किया है। रावण को एक अनाथ बच्चे की अदम्य इच्छाशक्ति के रूप में दिखाया है। अपने बल पर पिता के आश्रम से निकलता है । रावण का अनुशासनहीन एवं असंयमित बनने के पीछे उसका जो मानोवैज्ञानिक पक्ष है, उसको स्पर्श किया है"।[14]

अमीश त्रिपाठी के रावण एक अच्छे भाई होने का धर्म सदैव निभाया है । कुम्भकर्ण का जन्म एक खतरनाक वातावरण में होता है जहाँ लोगों ने रावण की माँ और नवजात शिशु कुम्भकर्ण की हत्या करने की साजिश रची थी। रावण के साहस ने उनकी रक्षा की। तलवार चलाने और चाकू चलाने में अपनी निपुणता का प्रदर्शन करते हुए, अपने भाई और माँ की सुरक्षा उन्होंने सुनिश्चित किया।

रावण का एक गुप्त कक्ष था जहाँ उन्होंने रुद्र वीणा, तबला, ढोल, डमरू, थविल, सितार, चिक्रा, शहनाई, बाँसुरी और चेंदा जैसे कई संगीत वाद्ययंत्र रखे थे। वे इन वाद्ययंत्रों को प्रयोग करना और इनके संबंध बारे में बहुत कुछ जानते थे। उन्होंने सोने की परत चढ़ाए हुए रावणहत्था नामक यंत्र का भी निर्माण किया था। संगीत के अतिरिक्त रावण एक महान चित्रकार भी था। उन्होंने अपने गुप्त प्रेम 'कन्याकुमारी' की कई तस्वीरें बनाईं, जिसमें उसे एक छोटी लड़की से एक महिला के रूप में विकसित होते दिखाया गया। कई पांडुलिपियों से भरे एक पुस्तकालय भी उनके संग्रहों का एक हिस्सा था।

रावण को एक बार यौन शोषण की शिकार बनी एक बच्ची को अपने पिता के चंगुल से बचाते हुए दर्शाया है । इस प्रकार पौराणिक रावण से भिन्न अमीश जी ने सिद्धांतों का पालन करनेवाले एक नेक व्यक्ति के रूप में रावण का चित्रण किया है ।

---

[14] नीरजा टी के, डॉ. जी. शांति – आधुनिक रावण की छवी, शोध दिशा – पृ स – 104

जब रावण को इस बात का ज्ञान होता है की सीता उनकी देवी कन्याकुमारी की पुत्री है तो भारतीय इतिहास में राम और सीता को स्थापित करने के लिए वह खुद को बलि छडाने का निर्णय लेते है। अपनी जीवन न सही किंतु अपनी मृत्यु को सार्थक बनाने का उनके अंतर लक्ष्य जागता है और अंत में राम के हाथों मरने का उनकी पद्धति सफल होता है।

"अमीश जी ने लंका के नरेश रावण के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उभारा है । हर सिक्के का दो पहलू होते हैं । ठीक उसी प्रकार हम रावण के व्यक्तित्व में विभिन्न पहलुओं को देख सकते हैं । अमीश जी ने यहाँ नीर-क्षीर का विवेक अपनाया है । रावण को पारंपरिक रावण से अलग कर उसके लिए गाथा में एक अस्तित्व प्रकट किया है । हम जैसे पाठकों को अमीशजी के यह राम चंद्र कथा श्रंखला के रावण जैसे नकारात्मक पात्र या ऐसे खलनायक की दृष्टिकोण से दुनिया को देखने एवं समझने का एक मौका देता है ।"[15]

नरेंद्र कोहली का रावण राक्षसी जात में जन्म लिए एक दुष्ट था जिसके हृदय में किसी प्रकार के मानविक संवेदना हमें देखने को नहीं मिलता। वहीं दूसरी तरफ अमीश त्रिपाठी के रावण नाग जात में जन्म लिए एक मनुष्य था जिसके हृदय में प्रेम जैसी कोमल भावना भी जागृत हुए थे। नरेंद्र कोहली की रावण वाल्मीकि रामायण के अधिक निकट है और अमीश जी की रावण एक ऐसे खलनायक है जिनके चरित्र और हैवानी करतूत के ज़िम्मेदार स्वयं समाज था।

5.1.3.4 लक्ष्मण

लक्ष्मण राम के सौतेले भाई और राजा दशरथ के पुत्र हैं । लक्ष्मण आदर्श एवं निष्ठावान भाई का प्रतिनिधित्व करता है । ऋषि विश्वामित्र और राम के साथ राक्षसों से लड़ना और राम के साथ वनवास में चौदह साल रहना, रामायण का यह दो मुख्य प्रसंग में लक्ष्मण ने सदैव राम का साथ निभाया। वह युद्ध में अत्यंत निपुण है । हालाँकि, लक्ष्मण राम की तुलना में कुछ हद तक भावनात्मक रूप से प्रेरित हैं; कहानी में कई बिंदुओं पर, राम को लक्ष्मण को बिना सोचे-समझे जल्दबाज़ी या हिंसक निर्णय लेने से मना करना पड़ता है । वह सीता की बहन उर्मिला से शादी करता है, लेकिन लक्ष्मण की पत्नी कहानी में प्रमुख भूमिका नहीं निभाती। इसी तरह, हालांकि वह शत्रुघ्न का जुड़वाँ भाई है, वह शत्रुघ्न की तुलना में राम के बहुत निकट थे।

---

[15] नीरजा टी के, डॉ. जी. शांति - आधुनिक रावण की छवी - शोध दिशा - पृ स - 107

नरेंद्र कोहली ने लक्ष्मण को रामायण का दूसरा नायक के रूप में प्रस्तुत किया है । दोनों भाइयों का चरित्र एक दूसरे से पूरक है । उन्होंने लक्ष्मण को एक अविवाहित राजकुमार के रूप में चित्रित किया है जिसने अपनी राजसी जीवन अपने भाई के लिए त्याग दिया है । शीघ्र कोपी लक्ष्मण जब अहिल्या के साथ हुई अत्याचार के बारे में सुनता है तो वह इंद्र को मारने की बात करता है । राम की शांत स्वभाव से भिन्न वह जस्बाती होकर फैसले लेते हैं । इसके बावजूद भी लक्ष्मण राम के समान तेजस्वी, पराक्रमी और गुणों से युक्त संतुलित मानसिकता रखने वाला एक व्यक्ति है और क्षमाशील नहीं है । मृत्यु शैया में पड़े अपने पिता से वह घृणा की भावना रखता है, क्योंकि उनकी वचन के कारण राम को वनवास के लिए निकलना पड़ा।

लक्ष्मण वास्तु शिल्प में निपुण था। वनवास के दौरान कुटिया निर्माण की ज़िम्मेदारी लक्ष्मण का था। विभिन्न प्रकार के वृक्षों के डालियों से वह सुंदर पर्णशाला बनाता था। जन्म स्थान में रहने वाले आदिवासियों को भी लक्ष्मण ने सुंदर, स्वच्छ एवं आकर्षक कुटिया बनाने का निर्देशन देता था।

शूर्पणखा जब लक्ष्मण को लुभाने का प्रयत्न करती है तो पहले लक्ष्मण बिना क्रुद्ध हुए स्थिति की संभालने का प्रयत्न करता है किंतु जब सीता को हानी पहुँचाने का प्रयत्न करती है तो लक्ष्मण उसकी नाक को चोट पहुँचाकर उसे दंडित करता है । लक्ष्मण के स्वभाव में उग्रता होने पर भी वह कोमल हृदय के व्यक्ति थे। जब उसके मित्र मुखर का मृत्यु रावण के हाथों होता है तो लक्ष्मण मुखर की चिता के पास बैठकर रोता है । लक्ष्मण सीता का अपहरण, जटायु और मुखर की हत्या के ज़िम्मेदार खुद को मानता है तो राम उसे सांतवना देते हैं । अंत में युद्ध के पश्चात जब सीता घायल लक्ष्मण को मिलने चिकित्सा शिखर में जाती है तो लक्ष्मण उनसे कहता है कि अगर सीता को रावण से नहीं बचा पाता तो खुद को कभी क्षमा नहीं कर पाता। इस प्रकार कोहली जी ने मार्मिक हृदय के धारक, जो अपनो पर संकट आने पर या बेसहारे लोगों को प्रति अत्याचार होते हुए देखकर उग्रता एवं आक्रोश दिखाने वाला एक संवेदनशील व्यक्ति के रूप में लक्ष्मण का चित्रण किया है ।

अमीश जी का लक्ष्मण राम के प्रति निष्ठावान भाई था जिसने सीता की बहन उर्मिला से मिथिला में विवाह की। राम की सुरक्षा लक्ष्मण के लिए अपना कर्तव्य जैसा था। अपनी पत्नी को छोड़कर राम के साथ एक विपत्ति भरा जीवन जीने के लिए वह तैयार हो जाता है ।

लक्ष्मण एक ऐसा भाई था जो अपने भाई के दर्द को समझता है । दशरथ के मन में राम के प्रति निंदा ने उसे सदैव दुखित किया और जब मौका मिलता है तो उसने निडर

होकर यह बात दशरथ के समक्ष कहता है। राम शांत स्वभावी होने के कारण चुपचाप सब कुछ सहने वाला व्यक्तियों में से एक था किंतु लक्ष्मण अपने भाई के साथ हो रही अन्याय के प्रति आँखें मूँदनेवाला बिल्कुल नहीं था।

राम जब पहली बार सीता को देखते हैं तभी उनके हृदय में सीता के प्रति प्रेम और सम्मान जागता है। प्रेम में पड़े अपने भाई के बिना कुछ कहे ही लक्ष्मण समझ जाता है कि सीता ही वह स्त्री है जिसे राम ने अपने जीवन साथी के रूप में चुना था।

वनवास के दौरान जब शूर्पणखा सीता पर हमला करती है तो वह उस पर वार करने से पीछे नहीं हटता। अपने भाई या भाभी को संकटों से बचाने के लिए वह सदैव चौकन्ना रहता था।

राम रावण युद्ध में भी वह राम के जितना ही बहादुरी दिखाता है। रावण के अजय सेनानायक धूम्राक्षु के साथ गधा युद्ध में उसे हराकर लक्ष्मण यह साबित करता है कि वह सही अर्थ में अयोध्या का राजकुमार और राम का भाई है। इंद्रजीत के बाण से बुरी तरह से घायल होने पर भी अपनी इच्छा शक्ति से उस जानलेवा वार पर भी वह जीत हासिल करता है। पारंपरिक रामायण के अनुसार रावण पुत्र इंद्रजीत की मृत्यु लक्ष्मण के हाथों से नहीं होता किंतु उसकी मृत्यु का एक महत्वपूर्ण कारक ज़रूर बनता है।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के लक्ष्मण की चरित्र में हमें ज़्यादा अंतर देखने को नहीं मिलता। दोनों लेखको के लक्ष्मण की दुनिया राम के इर्द गिर्द ही घूमता है। वह पूरे जीवन बिना किसी गिले के एक आज्ञाकारी भाई की भूमिका निभाता रहा।

5.1.3.5 दोनों राम कथा श्रृंखला में पाए जाने वाले सामान पात्रों की तुलना

1. दशरथ

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ राम के प्रति वैमनस्य। ➢ विलासी जीवन में डूबकर राज कार्यों से निंदा। ➢ काम में आसक्त जिसके कारण कैकेयी से विवाह। ➢ कौशल्या को पहेली पत्नी होने का स्थान कभी नहीं दिया। ➢ राम के प्रति दैर से पिता प्रेम की भावना जगी। ➢ अधिकार के छीन जाने की डर ने राम की राज्याभिषेक कराने के लिए बेबस।	➢ रावण के साथ हुई युद्ध में हार ने उनके अभिमान को ठेस पहुँचाई और एक राजा की उत्तरदायित्व से पीछे मुड़ गए। ➢ राम का जन्म उनकी हार को याद दिलाने के कारण राम और उनकी माँ के प्रति द्वेष। ➢ तेंदुए के आक्रमण से राम ने उन्हें बचाया तो पितृ प्रेम की भावना उठी।	➢ राम और कौशल्या के प्रति निंदा ➢ असफल एवं अयोग्य शासक ➢ राम के गुण एवं अच्छाई को पहचानने में देरी

1. कौशल्या

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ जेष्ठ पत्नी एवं जेष्ठ पुत्र की माता। ➢ दशरथ से तिरस्कृत। ➢ दशरथ राम को स्वीकार करने के बाद भी कौशल्या के जेष्ठ पत्नी की शान कभी वापस नहीं मिला। ➢ परिवार की सुख के लिए अपने व्यक्तित्व का बलिदान किया।	➢ चालीस वर्ष के आयु तक संतान विहीन। ➢ उपेक्षा भरी जीवन व्यतीत किया। ➢ राम के जन्म लेने के पश्चात भी स्थिती में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। ➢ राम को सुरक्षित करने के लिए किसी भी हद तक जाएगी।	➢ पति के प्रेम से तिरस्कृत। ➢ विशेष आयोजन में और उत्सव में साम्राज्ञि के तौर पर भाग ले सकती थी किंतु अंतपुर में वह स्थान कभी प्राप्त नहीं हुआ। ➢ दशरथ राम को स्वीकार करने के बाद भी हालत में कोई परिवर्तन नहीं आई। ➢ पूरे जीवन पति प्रेम से वंचित रहने के बाद बाकी जीवन अपने प्रिय पुत्र की वियोग में व्यतीत किया।

3. कैकेयी

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ दशरथ के सबसे प्रिय पत्नी और महल की तीन मुख्य रानियों में से तीसरी। ➢ हठीली, उग्र तेजस्विनी, महत्वाकांक्षिणी और असाधारण सुंदरी। ➢ स्वछंद वातावरण में पली राजकुमारी। ➢ युद्ध में दशरथ के साथ लड़ने जाती थी। ➢ कौशल्या के प्रति सहानुभूति नहीं थी। ➢ महल में आए बालक राम को उसने दासियों से पिटवाया किंतु बाद में राम प्रिय हो गया। ➢ कैकेयी के कारण दशरथ भी राम से प्रेम करने लगा। ➢ राम को वनवास भेज कर भरत के राज्याभिषेक करने की माँग रखती है ➢ कैकेयी की असलियत देखने के बाद दशरथ के ह्रदय में वैमनस्य जगी	➢ कैकेय देश की राजकुमारी और दशरथ की दूसरी पत्नी। ➢ लंबी, गौर वर्ण और सुडौल। ➢ वारिस विहीन होने के कारण कैकेयी से विवाह किया। ➢ युद्ध के दौरान हमेशा अपने पति के साथ रहती थी। ➢ चतुर एवं चालाक। ➢ दशरथ के समक्ष राम को अशुभ ठहराती थी। ➢ भरत को राम के खिलाफ जाने के लिए भटकती थी । ➢ दशरथ को भावनात्मक धमकी देकर अपनी दो वर माँगती है	➢ दशरथ की प्रिय पत्नी। ➢ अपने अधिकारों के लिए किसी को भी शत्रु बनाएगी। ➢ राजमाता बनने की कामना। ➢ धैर्यशाली योद्धा। ➢ पति के प्रति निष्ठता। ➢ अपने पुत्र भरत से बेहद प्रेम। ➢ राम और दशरथ को एक दूसरे के करीब लाने वाली अहम कड़ी।

4. सुमित्रा

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ मगध की राजकुमारी और अद्भुत सुंदरी। ➢ दशरथ की दूसरी पत्नी। ➢ एक पत्नी और पुत्र के रहते दशरथ का उनके साथ विवाह करना उन्हें पसंद नहीं थी इसलिए दशरथ का सदैव तिरस्कार किया। ➢ दशरथ की प्रेमिका बनने की कोई इरादा नहीं था। ➢ राम के प्रति प्रेम और सहानुभूति। ➢ अपने पुत्र लक्ष्मण को सदा राम के साथ चलने का उपदेश देती है ।	➢ पवित्र नगर काशी की राजकुमारी। ➢ दशरथ की तीसरी पत्नी। ➢ दृढ एवं विनम्र। ➢ लक्ष्मण और शत्रुघ्न से राम और भरत के साथ रहने के आदेश देती है । ➢ उसे पता था कि राम और भरत को जीवन पर लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ की आवश्यकता रहेगी।	➢ कौशल्या की कोमलता और कैकेयी की उग्रता दोनों उसमें शामिल थी। ➢ अपने पुत्रों को अयोध्या की शासक बनाने की इच्छा नहीं थी। ➢ राम से प्रेम करती थी और उसकी सुरक्षा के बारे में फ़िक्र करती थी। ➢ अपने पुत्रों को अच्छी परवरिश देती है ।

5. भरत

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ केकेयी और दशरथ का पुत्र। ➢ राम को लेने वन जाता हैं किंतु राम उसे वापस भेजते हैं । ➢ भरत मुख्य भूमिका नहीं निभाता। उसके बारे में कई जगह पर केवल उल्लेख हुआ है	➢ इसमें भरत मुख्य भूमिका निभाता है । ➢ एक प्रेमिका थी जिसके साथ उसका विवाह नहीं हो सका। ➢ राम वनवास के लिए निकलते समय अयोध्या में उपस्थित। ➢ राम रावण युद्ध में राम का सहायता करता है । ➢ रावण का पुत्र इंद्रजीत का मृत्यु इसके हाथों होता है ।	➢ अविवाहित। ➢ अयोध्या के सिंहासन को इनकार किया। ➢ राम के प्रति गहरा प्रेम एवं सम्मान।

6. शत्रुघ्न

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ लक्ष्मण का जुड़वा भाई एवं दशरथ और सुमित्रा का पुत्र। ➢ इसमें शत्रुघ्न का केवल उल्लेख हुआ है, वह एक मुख्य पात्र नहीं है।	➢ लक्ष्मण का जुड़वा भाई एवं दशरथ और सुमित्रा का पुत्र। ➢ एक प्रबल वास्तु शिल्पी, लंका में जाने के लिए पुल का निर्माण किया। ➢ युद्ध कला से अधिक ग्रंथ एवं साहित्य में रुचि, इसीलिए शरीर से अधिक बुद्धि का प्रयोग करता है।	➢ अविवाहित। ➢ राम से अधिक भरत के प्रति निष्ठता।

7. मंथरा

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ एक साधारण, संकुचित, अनादार मूर्ख तथा नीच चरित्र की दासी। ➢ कैकेयी उसे अपनी हिताकंक्षिणी मानती है । ➢ कैकेयी को राम के खिलाफ भटकाती है।	➢ एक अमीर, प्रबल, व्यवसायी महिला। ➢ अपनी पुत्री रोशनी का बेरहमी से हत्या होती है। ➢ रोशनी की कातिल तक नाबालिक होने के कारण राम उसकी मृत्यु की सज़ा देने से इनकार करते हैं। ➢ इस बात से क्रोधित होकर राम से बदला लेने के लिए कैकेयी को दशरथ और राम के खिलाफ भड़काती है।	➢ अपनी मतलब के लिए कैकेयी को उकसाने में शातिर। ➢ राम के प्रति वैमनस्य।

8. विश्वामित्र

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ आश्रम वासियों को परेशान और यज्ञ में भंग डालने वाले राक्षसों से लड़ने के लिए राम और लक्ष्मण को साथ लेकर जाते हैं। ➢ समाज सुधार के लिए राम को प्रेरित करते हैं। ➢ साधारण मनुष्य की पीड़ा को अनुभव करने की उपदेश देते हैं। ➢ राम को दिव्यास्त्रों की शिक्षा देते हैं और राक्षसों के साथ लड़ने के लिए तैयार करते हैं। ➢ सीता के साथ विवाह के संबंध में राम के मन में उठी आशंकाओं को दूर करते हैं। ➢ विश्वामित्र से की वचन का पालन करने के लिए राम वनवास करते हैं।	➢ मलयपुत्र के प्रमुख और विष्णु के छठे अवतार का प्रतिनित्व ➢ राम को राक्षसों के लड़ने के लिए लेके जाते है । ➢ अगले महादेव का जन्म हो तो उसके साथ मिलकर भारत के लिए काम करना ही उनका लक्ष्य है । ➢ राम को असुरास्त्र के प्रयोग करने के विवश करते हैं जिसके कारण उन्हें वनवास करना पड़ता है। ➢ भारत से अत्यंत प्रेम इसीलिए राम रावण युद्ध में मलयपुत्र कि सेना को राम की सहायता करने के लिए भेजते हैं।	➢ राम और सीता के विवाह कराने की पीछे उनकी एक योजना थी। ➢ भारत की उन्नति के लिए सदैव कार्य करना। ➢ राम, सीता और लक्ष्मण के चौदह वर्ष की वनवास के लिए महत्वपूर्ण कारक बने।

9. जनक

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ मिथिला अथवा जनकपुरी के राजा एवं सीता के पिता। ➢ सीता से मिलने से पहले ऋषि तुल्य जीवन जीते थे। ➢ आर्य कुल में सीता की विवाह कराना चाहते थे। ➢ सीता को विवाह संबंध अपवादों से बचाने के लिए उन्हें वीर्यशुल्का घोषित करते हैं।	➢ मिथिला के राजा एवं सीता और उर्मिला के पिता। ➢ सीता का मिलने तक संतानहीन रहे बाद में उर्मिला का जन्म हुआ। ➢ एक राजा के रूप में प्रभावशाली नहीं थे, मिथिला की प्रशासनिक कार्यों की उत्तरदायित्व उनकी पत्नी सुनैना निभाती थी। ➢ अपने भाई कुशध्वज के षड्यंत्र से मिथिला को बचाने में असफल।	➢ आज्ञानकुलशीला सीता को कभी पराया नहीं समझा। ➢ सीता की विवाह के लिए स्वयंवर का आयोजन किया।

10. जटायु

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ गृद्ध जात के वृद्ध योद्धा जो राक्षस विरोधी है । ➢ युद्ध के लिए ग्रामीण युवाओं के संगठन एवं प्रशिक्षण में सहयोग देते हैं ।	➢ नाग जाति के व्यक्ति और मलयपुत्र सेना की नेता। ➢ मुँह में सख्त एवं हड्डीदार था जो चोंच की तरह उसके चेहरे से बाहर निकला हुआ था। ➢ उसका चेहरा बारीक और रोएँदार बालों से ढका होने के कारण मनुष्य होकर भी गिद्ध जैसा दिखता था। ➢ सीता की साथ उसकी मित्रता थी और वह वनवास के दौरान सीता के अंगरक्षक थे।	➢ राम और सीता के प्रति निष्ठता। ➢ सीता की सुरक्षा के लिए रावण से लड़के वह अपनी जान गवा देते हैं ।

11. हनुमान

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ वानर जाति के एक राजनेता अधिकारी एवं योद्धा जो समाज के चिंतक भी है। ➢ सीता को खोजते लंका की और वह समुद्र में तैर के जाते हैं और सीता को राम की मुद्रिका दिखाते हैं । ➢ पूँछ में आग लगने पर लंका दहन करते हैं । ➢ राम रावण युद्ध के लिए वानर सेना का संगठन करते हैं ।	➢ नाग जाति के व्यक्ति जिसका चेहरा बंदर के समान था। ➢ वायुपुत्र सेना का अंग और सीता की सहेली राधिका की चचेरे भाई। ➢ सीता को बचपन से जानते थे। ➢ कुंभकर्ण से गहरी मित्रता। ➢ सीता से मिलने के लिए राम की चिट्ठी लेकर लंका में जाते हैं ।	➢ राम और सीता के प्रति निषठता। ➢ एक प्रबल योद्धा। ➢ राम रावण युद्ध में राम की सहायता किया।

12. शूर्पणका

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ काम वासना से युक्त एक राक्षसिनी जो रावण की राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी थी। ➢ राम और लक्ष्मण के प्रति आसक्त होकर उनके समक्ष विवाह की प्रस्ताव रखती है । ➢ लक्ष्मण उसकी नाक और कान में वार करता है । ➢ रावण को सीता की सौंदर्य का वर्णन करके उनकी अपहरण करने के लिए उकसाती है ।	➢ रावण की बहन जिसकी निष्ठा रावण के प्रति नहीं बल्कि विभीषण के प्रति थी। ➢ राम पर मोहित होती है। ➢ लक्ष्मण के वार से नाक पर चोट लगने के बाद रावण को उनकी बहन होने के दावा देकर सीता की अपहरण करने के लिए उकसाती है ।	➢ रावण के प्रति प्रेम या निष्ठा का अभाव। ➢ राम पर आसक्ती। ➢ सीता पर वार करने की कोशिश। ➢ लक्ष्मण की हाथों आहत होना। ➢ सीता के अपहरण के लिए रावण का बहाना बनना।

13. विभीषण

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ रावण का भाई ➢ रावण की अभद्र कार्यों से परेशान। ➢ लंका और लंका की जनता के प्रति निष्ठा जिसके कारण युद्ध में राम के पक्ष में खड़े होते हैं । ➢ एक नेक इंसान जो अंत में लंकापति बनता है ।	➢ रावण का सौतेला भाई। ➢ एक प्रबल वास्तु शिल्पी और एक आत्ममुग्ध व्यक्ति। ➢ राम रावण युद्ध में राम के पक्ष में इसलिए खड़ा होता है, क्योंकि उसे लंका की सिंहासन से प्रेम था। ➢ उसे अपनी और अपने परिवार से अतिरिक्त किसी और का चिंता नहीं है। ➢ अंत में लंका का एक छोटी सी हिस्से की राजा बनता है ।	➢ रावण के प्रति भातृ प्रेम से अधिक अपने लक्ष्यों की पूर्ति को महत्व देता है । ➢ राम रावण युद्ध में राम के समर्थक बनता है ।

14. कुंभकर्ण

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ एक शक्तिशाली योद्धा किंतु सदा नशे में धुत रहता है । ➢ सत्ता के लिए लड़ाई ना हो इसलिए रावण उसकी बुरी आदतों को बढ़ावा देता है। ➢ अपने भाई के लिए राम के खिलाफ युद्ध करता है किंतु युद्ध में वह जान गवा देता है ।	➢ रावण के विश्वास पात्रों में से एक। ➢ एक भले इंसान जो सबका प्रिय था । ➢ अपने भाई पर होने वाली जानलेवा वार के समक्ष ढ़ाल बनकर खड़ा होता है । ➢ उस वक्त लगी घाव भरने के लिए मलयपुत्रों से मिली एक दवा का सेवन करता है जिसकी दुष्प्रभाव के कारण उसे सदैव भूख एवं नींद आती है ।	➢ रावण के प्रति निष्ठता। ➢ सदैव सोने की आदत। ➢ राम रावण के युद्ध में रावण के पक्ष से लड़कर अपना जान गवा देता है।

15. मंदोदरी

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ रावण की पत्नी और इंद्रजीत की माँ । ➢ राक्षसी कुल के होक भी लोगों की प्रति सहानुभूति । ➢ सीता के अपहरण की विरुद्ध थी। ➢ सीता को एक साल की अवधि देने के लिए रावण को मानती है । ➢ अंत तक अपने पति के कर्मों पर पछतावा थी।	➢ वेदवती के अतिरिक्त किसी स्त्री की नैतिक शक्ति को अगर रावण ने स्वीकार किया है तो वह मंदोदरी थी। ➢ वह एक बेबस स्त्री नहीं थी। ➢ इंद्रजीत का बेहतरीन परवरिश किया। ➢ इंद्रजीत को युद्ध पद्धति और नीति के संबंध में उपदेश देती है।	➢ अपने पति के विवाहेतर संबंधों से अवगत थी। ➢ पुत्र से गहरा प्रेम और अंत तक उसकी सुरक्षा करने का प्रयत्न किया। ➢ लंका की रानी होने पर भी कभी खुश नहीं रह पाई। ➢ अंत में पूरे परिवार की मृत्यु की गवाह बनी।

16. इंद्रजीत

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ रावण का सबसे प्रिय पुत्र एवं एक प्रतिभाशाली योद्धा। ➢ अपने पिता के निर्णय पर सवाल करता था और पुत्र की विरोधी बन जाने के डर रावण में था। ➢ रावण के लिए युद्ध लड़ता है किंतु लक्ष्मण के हाथों मृत्यु हो जाता है ।	➢ अपनी माता–पिता से बेहद प्रेम करता था। ➢ रावण के मना करने के बावजूद अपने पिता की रक्षा के लिए युद्ध में भाग लेता है । ➢ लक्ष्मण पर घातक वार करता है । ➢ भरत के हाथों उसकी मृत्यु हो जाती है ।	➢ एक प्रतिभावान योद्धा जो इंद्र पर भी जीत हासिल करने की काबिलियत रखता है । ➢ रावण के प्रति प्रेम एवं निष्ठा। ➢ राम रावण युद्ध में मृत्यु का वरण।

17. बालि

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ वानर जाति के शक्तिशाली व्यक्ति और किष्किंधा के शासक। ➢ अहंकारी और विलास में डूबा हुआ राजा। ➢ अपने भाई की पत्नी रुमा के साथ ज़बरदस्ती करता है । ➢ सुग्रीव और उसकी बंधुओं के साथ बुरा व्यवहार करता है । ➢ सुग्रीव के साथ द्वंद्व युद्ध के दौरान राम उसको मार डालते हैं ।	➢ किष्किंधा के राजा। ➢ अपने पुत्र अंगद से बेहद प्रेम करता है । ➢ अपने भाई सुग्रीव से घृणा करता है । ➢ लंका के युद्ध में राम को अपने सेना और गजवाहिनी प्रदान करने के बदले उसके साथ द्वंद्व युद्ध करने का शर्त रखता है । ➢ राम के साथ द्वंद्व युद्ध उसमें मृत्यु का वरण करता है ।	➢ सुग्रीव से घृणा। ➢ राम के हाथों मृत्यु।

18. मारिच

नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला	अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला	समानताएँ
➢ राक्षसी कुल के व्यक्ति जो आश्रम वासियों के यज्ञ में भंग करता है। ➢ सीता की अपहरण में रावण का सहायता करता है। ➢ राम के हाथों मृत्यु हो जाती है।	➢ रावण और उनके परिवार को सप्त सिंधु से बचने में मदद करता है। ➢ रावण के साथ तस्करी का काम करता है। ➢ राम रावण युद्ध में मृत्यु का वरण करता है।	➢ रावण के प्रति निष्ठा। ➢ रावण के लिए जान गवा दिया।

5.1.3.6 अन्य पात्र

कोहली जी की राम कथा श्रंखला में कई नए पत्र है जो अन्य राम कथा संस्करणों में हमें देखने को नहीं मिलता। जैसे –

- ऋषि शरभंग – आर्य चेतना के प्रतिनिधित्व, न्याय और मानवता पर से भरोसा उठने लगे तो अत्याचार एवं अन्यथा की तरफ जनता की ध्यान आकर्षित करने के लिए एवं उन्हें अवगत कराने के लिए वह आत्मदाह करते हैं।
- माँडकर्णि – खान श्रमिकों के नेता जो पहले तो उनके हित के लिए लड़ता है किंतु खान मालिकों ने उसे सुविधा एवं संपत्ति देकर खरीद लेते हैं तो वह उन विलासों में डूब कर उनके पक्ष में चला जाता है।
- वानर मुर्तु – महानगर के सुविधा भोगकर लौटे एक ग्रामीण प्रतीक रूप।
- मायावी – किष्किन्धा में नशीले पदार्थों को बेचकर लोगो को सह मार्ग से भटकाने का प्रयत्न किया।
- मुखर – लक्ष्मण का प्रिय मित्र जो सीता की रक्षा करता हुआ अपनी जान की बलिदान देता है।

यह सभी मुख्य पात्र हैं जिन्होंने इस कथा में किसी न किसी प्रकार के उद्देश्य का पूर्ण किया है।

अमीश जी की राम कथा श्रृंखला में पारंपरिक राम कथा के पात्र एवं कई सारे नए पत्रों का भी उल्लेखन हुआ है जो हमें पारंपरिक रामायण में देखने को नहीं मिलते।

- अरिष्टनेमी – मलयपुत्रों की सेनापति और विश्वामित्र के खास व्यक्ति।
- समिचि – मिथिला की नागरिक एवं सुरक्षा अधिकारी जिसकी निष्ठता रावण के प्रति थी।
- राधिका – सीता की सहेली और रावण की चचेरी बहन।
- मारा – धन लेकर कत्ल करने वाले एक व्यक्ति जिसने सीता पर आक्रमण किया।
- श्वेतकेतु – सीता की गुरु।
- अकंपन – रावण के निकटतम सहयोगियों में से एक जो लंका के युद्ध में पहले रावण के पक्ष से लड़ा और बाद में राम के पक्ष हो गए।
- क्रकचबाहू – चिल्का के प्रांतपाल जिसके राज्य को रावण लूटते हैं।

अमीश जी ने कई नए पात्रों का परिचय दिया है जिनके अस्तित्व के प्रभाव मुख्य पात्रों की धर्म के तरफ यात्रा में उनकी सहायता करते हैं।

5.1.4 गुरु की महिमा

गुरु एक ऐसे व्यक्ति होते हैं जो हमारे चरित्र को आकार देते हैं । हमारे मन को ढ़लते हैं और लक्ष्य की ओर हमारी मार्गदर्शन कराते हैं। एक व्यक्ति की शैक्षिक यात्रा और व्यक्तिगत विकास में एक गुरु की क्या प्रभाव है यह हमें नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की राम कथा के ज़रिए पता चलता है।

अभ्युदय का पहला भाग दीक्षा की शुरुआत गुरु विश्वामित्र से होता है जिन्होंने एक उपेक्षित राजकुमार राम को अपने जीवन के लक्ष्य से परिचित कराया। ताटकावन की ओर विश्वामित्र राम और लक्ष्मण की यात्रा में वे राम को कई सीख देते हैं। वे दोनों राजकुमार से कहते हैं कि राम और लक्ष्मण सामान्य नागरिकों के बीच जाकर साधारण मनुष्य की पीड़ा का अनुभव करें। राजकुमारों की सुविधाजनक जीवन से हटकर साधारण व्यक्ति के संघर्षों को देखने की उपदेश देते हैं। विश्वामित्र राम से यह आश्वासन माँगते हैं कि वह राक्षसों के आक्रमण की प्रतीक्षा न करके अपना राज्य छोड़कर गहन वनों में रहकर वहाँ के आश्रमों की रक्षा करें और राक्षसों का उन्मूलन करें। उनका उद्देश्य राम को साधारण जनता के निकट लाना था। उन्हें डर था कि अन्य आर्य राजाओं के प्रकार सुख लोलुपता में राम अपने लक्ष्य को विस्मृत करेंगे। उनका लक्ष्य राम को एक जन नेता के रूप में विकसित करना और जनता में आत्मविश्वास जागृत करने के लिए उनके व्यक्तित्व का उपयोग करना था। आदर्श शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए जनता के सुख–दुख से परिचित शासक अत्यंत आवश्यक है और यह बात विश्वामित्र राम को समझाते हैं। विश्वामित्र राम को अन्याय के विरोध करने का उपदेश देते है – "अन्याय का विरोध। प्रत्येक मूल्य पर अन्याय का विरोध। वह अन्याय चाहे तुम्हारे अपने परिवार में हो, अपने राज्य में हो,

चाहे राज्य के बाहर हो। विशेष रूप से कहूँगा, निष्पक्ष, मौलिक मानवीय न्याय का पक्ष लेकर, जीवन व्यतीत करने वाले उन ऋषियों की रक्षा, जो हिमालय से लेकर दक्षिण में महासगार तक विभिन्न स्थलों पर बैठे सत्य की तपस्या कर रहे हैं । वे ऋषि तथा उनके आश्रम सर्वथा सुरक्षाहीन हैं, पुत्र जिस भी समय कोई राक्षस चाहता है, उन पर आक्रमण कर उनकी हत्या कर देता है, उनका मांस खा जाता है, उनकी अस्थियाँ चबा जाता है। यदि ये उच्छृंखल राक्षस अपनी इस क्रिया की इसी प्रकार पुनरावृत्ति करते रहे तो क्रमशः ये ऋषि समाप्त हो जाएँगे। इस देश में स्वतंत्र, मौलिक चिंतन समाप्त हो जाएगा, न्याय का विचार समाप्त हो जाएगा, सदाचरण और संस्कृति समाप्त हो जाएगी। मैं इन समस्त चीजों के लिए रक्षा का वचन चाहता हूँ।"[16] एक प्रज्ञात्मक शिष्य होने के कारण विश्वामित्र के सीख को समझने में राम को किसी प्रकार की कठिनाई महसूस नहीं हुई। राम को आर्य कुल के लिए राजा के रूप में अनुकूल देखकर विश्वामित्र राम को दिव्यास्त्रों की शिक्षा देते हैं और राक्षसों से लड़ने के लिए उन्हें तन मन से तैयार करते हैं।

विश्वामित्र और राम की यात्रा का अंत मिथिला में होता है जहाँ विश्वामित्र राम को सीता की स्वयंवर में हिस्सा लेने के लिए कहते हैं। राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर विचार करने के पश्चात वे जनकपुरी और अयोध्या के बीच वैमनस्य समाप्त करने के लिए राम और सीता के विवाह कितना आवश्यक है यह विश्वामित्र राम को समझाते हैं। मिथिला में राम को लाने के संबंध में विश्वामित्र का कथन इस प्रकार है – "राम! तुम्हें यहाँ लाने के एक-दूसरे से जुड़े हुए अनेक कारण हैं । मैं अंतिम लक्ष्य के लिए तुम्हारी जैसी तैयारी चाहता हूँ, उसकी पूर्णता जनकपुर में ही होगी, वत्स! यदि यहाँ मेरी योजना संपन्न हो गई तो फिर मैं तुम्हें और कहीं नहीं ले जाऊँगा। तुम्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए अकेला छोड़कर अपने आश्रम लौट जाऊँगा"[17] इस प्रकार विश्वामित्र की उपदेश को मानकर सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए राम सीता से विवाह करते हैं और राम को जनसेवा में समर्पित होने के लिए सदैव तैयार सहभागी पत्नी के रूप में प्राप्त होता है।

ऐसा कहा जा सकता है कि अमीश त्रिपाठी की राम कथा गुरु और शिष्यों की कहानी है क्योंकि वहीं सभी घटनाओं के मुख्य प्रचारक है। इस कहानी में दो प्रबल गुरुओं को प्रस्तुत किया गया है और वह है विश्वामित्र तथा वशिष्ठ । यह दोनों एक ही गुरु के शिष्य हुआ करते थे जो बाद में एक दूसरे के शत्रु बन गए। भारत के अगले विष्णु के पद के लिए विश्वामित्र सीता को ओर वशिष्ठ राम को प्रशिक्षित करते हैं । इस तथ्य को इनकार नहीं कर सकते कि दोनों गुरु असाधारण रूप से प्रतिभाशाली हैं और सप्त सिंधु के गौरव को वापस लाने के लक्ष्य रखने वाले हैं किंतु उनके कार्य करने की शैली अलग है ।

---

[16] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स – 49

[17] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स – 157

विश्वामित्र अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए किसी भी हद तक जाने में यकीन रखते हैं । वह दवाओं के माध्यम से रावण और कुंभकर्ण को जीवित रखते हैं ताकि सही समय पर रावण को सीता की हाथों मारकर उन्हें उद्धारकर्ता की प्रतिष्ठा अर्जित करा सके। किंतु वशिष्ठ सीधे रास्ते पर चलते हैं और राम को संभावित परिस्थितियों के लिए तैयार करते हैं । इन दोनों गुरुओं की तरीके चाहे जैसे भी हो हम इस बात को अनदेखा नहीं कर सकते कि उनकी उपस्थिति बहुत तार्किक रूप से इस तथ्य को स्थापित करती है कि शिक्षक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति है और वह अपने बुद्धि और प्रतिभा से किसी देश का भविष्य बदलने में सक्षम है ।

गुरु वशिष्ठ ने राम को एक देश को चलाने में नियम एवं कानून के महत्व से परिचित कराया जिससे समाज सभ्य बन सकता है । वह राम को समझाते हैं कि कानून जीवन शैली का बुनियाद है । वशिष्ठ राम से कहते हैं कि "हां, राम । कानून! कानून ही उस संरचना का आधार हैं, जिन पर कोई समुदाय चलता है । कानून ही जवाब है ।"[18] वशिष्ठ राम को सच और झूठ की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि सच छुपाने का मतलब झूठ बोलना नहीं है । उन्होंने पीड़ा देने वाली सत्य की तुलना में अगर सफेद झूठ से अच्छा परिणाम प्राप्त हो सकता है तो वह गलत नहीं है । राम वशिष्ठ के बाद मानने को तैयार नहीं होते तो वह अपने शब्दों को तोलकर राम को समझाते हैं । वे कहते हैं कि मुखिया वरुण जो किसी कानून के कारण अयोध्या से मदद लेने से इनकार करते हैं उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि वशिष्ठ कहाँ से है । अगर उन्हें ज्ञान होता तो शायद वे वशिष्ठ को उसे आश्रम में रहने नहीं देते। इसीलिए वशिष्ठ झूठ नहीं बोलते बस सच का उजागर न करके उन्होंने अपने आश्रम की रक्षा की।

आगे वह राम को जीवन जीने की आदर्श तरीके की शिक्षा देते हैं । वह उन्हें जीवन जीने की दो पथ के बारे में बताते हैं – स्त्रैण पथ एवं पौरुष पथ। स्त्रैण पथ में आज़ादी, जुनून और सौंदर्य की प्रधानता थी। यह दयालु, रचनात्मक और कमजोरों का पालन पोषण करने वाला होता है किंतु जब स्त्रैण सभ्यता का पतन होने लगता है तो यह भ्रष्ट, गैर ज़िम्मेदार और पतित होने लगता है । पौरुष पथ सत्य, कर्तव्य और सम्मान की परिभाषा है । यह पथ सक्षम और समतावादी होती है किंतु इसकी पतन होने पर मतांध, सख्त और कमज़ोरों के प्रति निर्दय हो जाती है । वह कहते हैं कि जीवन जीने की यह दो प्रणाली चक्रीय तरीके से आगे बढ़ता है । जब स्त्रैण पथ का पतन होता है तब पौरुष पथ को एक सहारे के रूप में अपनाना चाहिए और जब पौरुष पथ का पतन होता है तो स्त्रैण पथ अपनाया जाना चाहिए। फिर उनसे कहते हैं कि सबसे प्रथम पौरुष पथ की स्थापना असुरों

[18] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 55

के गुरु शुक्राचार्य ने की थी। इस प्रकार वशिष्ठ से मिली हर सीख को राम ने अपने जीवन में अपनाया और अयोध्या वापस जाने पर उन्होंने गुरु से मिली सीख के अनुसार पुलिस विभाग चलाया जिससे अयोध्या में अपराध दर काफी कम होने लगा।

महर्षि विश्वामित्र सीता की गुरु अतः श्वेतकेतु के आश्रम का संदर्शन करते हैं, तो उनकी मुलाकात तेरह साल की उम्र की सीता से होती है। विश्वामित्र सीता को पहली बार भाला चलाते हुए देखते हैं। जिस प्रकार से उन्होंने भाले को पकड़ रखा था और जिस प्रकार से उन्होंने भाला चलाया जो ठीक लक्ष्य पर जाकर लगा, विश्वामित्र सीता से बहुत प्रभावित हो जाते हैं। एक तेरह साल की लड़की के लिए युद्ध में सीता की कुशलता प्रशंसीय थी। बाद में सीता को नाग जात के जटायु के साथ बिना कोई भेदभाव किए सम्मान पूर्वक उन्हें खाना परोसते देखकर विश्वामित्र को यकीन हो जाते हैं कि सीता असाधारण है। विश्वामित्र और सीता के बीच सम्राट भरत के वंशजों के साम्राज्य के पतन के समय भारत में योद्धाओं की स्थिति, विदेशी हैवान, रावण के हाथों सप्त सिंधु का हार यथार्थवाद, दर्शन जैसे विषयों पर वार्तालाप होता है। विश्वामित्र के हर प्रश्न का तार्किक रूप से उत्तर देती हुई सीता को देखकर मन ही मन वे सोचते हैं "होशियार, अपनी उम्र के हिसाब से बहुत होशियार।"[19] सीता एक ऐसी छात्रा थी जिसकी गुरु होने पर उन्हें गर्व महसूस कराती थी। सीता की होशियारी देखकर विश्वामित्र मलयपुत्रों की सातवें विष्णु बनाने का निर्णय लेते हैं।

एक अनुष्ठान के बाद विश्वामित्र सीता से यह खुलासा करते हैं कि अब सीता विष्णु बनेगी। वह सीता से कहते हैं कि उनके प्रशिक्षण जल्दी शुरू हो जाएगा। सीता जैसे ही वह गुरुकुल छोड़ेगी उन्हें मलयपुत्रों की राजधानी अगस्त्यकूटम में ले जाएँगे और उसके बाद पूरे भारत की यात्रा करके इस पद में विराजमान होने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो जाएँगी। सत्रह साल में मिथिला की प्रधानमंत्री बनकर अपने देश में सकारात्मक सुधार लाकर मिथिला की पुरानी प्रौढ़ एवं प्रसिद्ध पुन स्थापित की। मिथिला की वित्तीय स्थिति ठीक होने के पश्चात सीता अपनी प्रशिक्षण पूर्ण करने के लिए मलयपुत्रों की राजधानी अगस्त्यकूटम की ओर यात्रा करती है। इस प्रकार विश्वामित्र ने एक स्त्री को भारत के सातवें विष्णु के पद के लिए चुना और उन्हें इसके लिए सही मार्गदर्शन दिया।

विश्वामित्र को दोनों राम कथाओं में एक गुरु के रूप में काफी महत्व मिला है। राम की गुरुकुल जीवन के प्रसंग अभ्युदय में उल्लेखित न होने के कारण हम राम की गुरुकुल जीवन और वहाँ से मिली शिक्षा के संबंध में अज्ञात है, किंतु कोहली जी इस कमी को पूरा करते हुए राम को विश्वामित्र से एक अच्छे शासक बनने की सीख मिलते हुए उन्होंने

[19] अमीश त्रिपाठी – सीता मिथिला की योद्धा – पृ. स 74

दर्शाया है । दोनों लेखकों ने गुरु की महिमा को समझा है और अपने उपन्यास में इसको विस्तृत रूप से सृजन किया है ।

5.1.5 राम – रावण युद्ध का चित्रण

राम रावण युद्ध भारतियों के लिए अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है । भारतवासी हर साल इस जीत की याद में धूमधाम से त्यौहार मनाते हैं । जिस दिन राम ने रावण को हराया उस दिन की याद में हर साल दशहरा का पर्व भारत में मनाया जाता है । दशहरा अर्थात दस सिर वाले रावण की हार। यह विजयदशमी नाम से भी जाना जाता है जो भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है । दिवाली राम की अयोध्या वापसी के उत्सव का प्रतीक है । राक्षस रावण को हराना और चौदह साल की वनवास से अयोध्या में लौट रहे राम सीता और लक्ष्मण की याद में भारत के हर घर में दियें जलाए जाते हैं ।

आखिर भारतीयों के लिए यह जीत इतना महत्व क्यों है ? वह इसलिए क्योंकि राम रावण युद्ध में रावण की हार एक ऐसा मिथक है जो भारतीय संस्कृति का हिस्सा बन चुका है । राम कथा के विभिन्न संस्करणों में लेखकों ने इस युद्ध को अपनी दृष्टिकोण से देखा है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने युद्ध के दृश्यों को बहुत ही सरल रुप से लिखा है जो प्राचीन महाकाव्य में हमें देखने को मिलता है । महान युद्ध दृश्यों और स्थिति की गंभीरता का अद्‌भुत संयोजन के साथ प्रस्तुत करने में दोनों लेखक सफल हुए हैं।

5.1.5.1 नरेंद्र कोहली की दृष्टिकोण में राम – रावण युद्ध

राम और उनकी सेना भूमि तल एवं सागर के बीच जल पोतों से बड़ी शिलाएँ भरकर डुबो दिया और बीच में वह सेतु राजमार्ग जैसा बन जाता है । राम और उनकी सेना वह पार करके लंका पहुँच जाती है और लंका घेर लेती है । राम के संदेश लेकर आए अंगद को रावण अपनी पक्ष में करने की कोशिश करता है किंतु अंगद मना करता है । अंगद के इनकार करने पर रावण अपनी सेना को अंगद को मारने का आदेश देता है । रावण की राक्षसी सेना शस्त्र वर्षा आरंभ करते हैं किंतु अंगद दीवार लांगकर लौट आते हैं । लंका की पश्चिमी द्वार खुल जाने पर वानर दल आक्रमण आरंभ करते हैं । राक्षसी सेना के समक्ष निडर होकर लड़ती वानर सेना को देखकर रावण की सेना चिंतित हो जाते हैं । ज़हरीली दिव्यास्त्रों से मेघनाथ राम और लक्ष्मण को गहरी रूप से चोट पहुँचाती है । निराश वानर सेना को पराजित होते हुए महसूस होते हैं । उस दिन का युद्ध समाप्त हो जाता है । विचित्र नवीन औषधीय से राम और लक्ष्मण को सचेत करते हैं ।

युद्ध के दूसरे दिन रावण की सेना का हारने की बारी थी। राक्षसी दल के प्रमुख वीर नायकों की मृत्यु से दुखी होने के कारण अगले दिन युद्ध में रावण और मेघनाथ प्रस्तुत नहीं होते। उस दिन कुंभकर्ण युद्ध में शामिल होता है किंतु राम के हाथों को कुंभकर्ण की मृत्यु हो जाता है।

इंद्रजीत के साथ युद्ध में राम की सेना फिर से पराजित हो जाते हैं क्योंकि वह कवच रक्षित रथ में बैठकर युद्ध करता है। राम के सेना को दिखाई नहीं पड़ता। राम और लक्ष्मण को गहरी चोट लगती है और उनके अनेक सेनिकों को अपनी जान गवना पड़ता है। विभीषण राम को यह उपाय बताते हैं की रात को वह निकुभिल बाली देवी के समक्ष यज्ञ में मग्न रहने के कारण उस वक्त आक्रमण करेंगे तो उनके पास न दिव्यास्त्र होंगे न कवच रक्षित रथ। विभीषण लक्ष्मण का मार्गदर्शन कराते हैं। अगस्त्य मुनी द्वारा दिए गए 'एन्द्रास्त्र' द्वारा लक्ष्मण मेघनाथ का वध कर देता है।

राम रावण युद्ध में इंद्र उनका मदद करता है। अहिल्या के साथ उसका दुर्व्यवहार और अपने पुत्र जयंत के सीता के साथ अभद्र हरकत के बाद राम की इनकार के डर से वह प्रत्यक्ष रूप से राम की सहायता नहीं करते। वह दूर से देवास्त्र की व्यवस्था करके शिव को युद्ध में तटस्थ रहने का वचन लेते हैं। इस प्रकार राम की विजय निश्चित हो जाता है।

रावण की पूरी सेना नष्ट हो जाती है तो वह युवकों का बलपूर्वक सेना में भर्ती कराने का प्रयत्न करता है। रावण विभीषण के परिवार को हानि पहुँचाने का कोशिश करता है किंतु विभीषण उन्हें पहले ही सुरक्षित करते हैं। रावण सीता की हत्या करने का निर्णय लेता है, किंतु उसके अंदर के 'प्रति रावण' उसका धिक्कार करता है और युद्ध भूमि में वापस जाने के लिए मजबूर करता है। अकेला रावण युद्ध में अपनी प्रबलता दिखाता है। वह विभीषण पर हमला करने का प्रयत्न करता है किंतु लक्ष्मण विभीषण की सुरक्षा करता है। इंद्र के सारथी अनेक देवास्त्र से युक्त रथ लेकर युद्ध भूमि में आता है। अब तक रावण एकदम थक जाता है और अंत में राम अगस्त्य मुनी द्वारा दिए गए प्रदत्त ब्रह्मा निर्मित बाण से रावण का वध करते हैं।

5.1.5.2 अमीश त्रिपाठी की दृष्टिकोण में राम – रावण युद्ध

शत्रुघ्न के नेतृत्व में आबनूस की लकड़ी और प्लेटिग्यरा प्रवाल पत्थर से बनी धनुषकोडी सेतु पार करके राम और उनकी सेना लंका में आते हैं। विभीषण राम को ओंगईओहरा के नदी में स्थित भव्य दुर्ग के बारे में बताते हैं। सेना दो हिस्सों में बाँट जाते हैं और लक्ष्मण की सेना दबे हुए पत्थरों से चिन्हित टेढी – मेढी पगडंडी पर घंटों तक

चल के पहाड़ की तलहटी में बनी सुरंग के अंतिम छोर पर पहुँच जाते हैं । उसके अंदर सुरंगित सीढ़ियाँ बनी थी। वह चढ़कर लक्ष्मण और पाँच सो सेना ऊपर पहुँच जाते हैं और वहाँ से निकलने की प्रतीक्षा करते हैं । कुछ देर बाद सुरंग से अहिस्ता निकल कर लक्ष्मण ने देखा कि सौ लंकाई सैनिक कुछ दूरी पर निशब्द खड़े थे। वह आक्रमण की प्रतीक्षा में दूसरी सुरंग के सामने खड़े थे क्योंकि इस सुरंग का ज्ञान उन्हें नहीं था। लक्ष्मण अपनी सैनिक को आक्रमण करने का आदेश देता है ।

लक्ष्मण और लंका की सेनापति धुम्राक्षु के बीच लड़ाई शुरू होता है । धुम्राक्षु 'कोडुमनल' नामक तलवार और गधा निर्माण के लिए प्रसिद्ध नगर में बनी अस्त्र का प्रयोग करता है । लक्ष्मण गदे की मूठ घट में छिपा खंजर को धुम्राक्षु के हृदय में धंसकर एक वीर योद्धा को लक्ष्मण एक सम्मानपूर्वक मृत्यु प्रदान करता है । लक्ष्मण उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आगे बढ़ता है ।

अयोध्या के एक सैनिक से राम की मुख्य सेना की पश्चिम की ओर से आने की खबर सुनकर इंद्रजीत और मारीच सैनिकों को लेकर सिगरिया चले जाते हैं । राम और उनकी सेने को यह खबर मिलता है कि लंकाई ओंगईओहरा के पीछे हट रहे थे अर्थात उन्हें पश्चिम से होने वाली आक्रमण की सूचना मिल चुकी थी। उनकी सेना जब वहाँ पहुँच जाएँगी तब तक वह सिगारिया की चार दिवारी में सुरक्षित हो जाएँगे।

राम की सेना लंका के तट पर पहुँच जाते हैं किंतु लंका की सेना अभेद्य दुर्ग के अंदर छिपे बैठे थे। दुर्ग के चारों ओर गेहूँ के खेत को वह जलाते हैं । अनाज की दुर्लभ अवस्था पर जब सेना बाहर निकलेंगे तभी उन पर हमला करने की योजना थी। वे लंका की सेना को परास्त करके लंका की सीमा पार करके अंदर जाने में सफल हो जाते हैं ।

पिछले कुछ महीनो में बनी राम की पक्ष से लड़ रही चार अलग–अलग सेना – अयोध्याई, वानर, मलयपुत्र एवं वायुपुत्र को सफलता पूर्वक एक संयुक्त, अनुशासित और संगठित युद्ध इकाई में बदलने में राम सफल हुए थे। वे राम की जय जयकार करके युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं ।

युद्ध में पहला वार अयोध्याई करते हैं क्योंकि रावण ने अपनी सेना को पहला वार न करने की आदेश दिए थे। राम पहले चार टुकड़ियाँ भेज कर लंकाई सेना का कम नुक्सान किया। कुछ लंकाई घुड़सवार आगे बढ़ने लगे। वे जानते थे की छोटी सी अयोध्या टुकड़ी को वे आसानी से हरा सकते थे। यह देखकर अयोध्याई पीछे हटने लगे। अयोध्या सेना की इस कायरता को देखकर मरीच और लंकाई विचलित हो जाते हैं । तभी राम अपने गजवाहिनी को आक्रमण करने की आदेश देते हैं ।

रावण और उनकी सेना हाथियों को देखकर चौंक जाते हैं । स्तब्ध सेना एक–एक करके हाथियों के पैर के नीचे कुचलने लगता है । लंका को कई घुड़सवारी नष्ट होती गई किंतु वह पीछे नहीं हटे । वे लड़ते गए और मरते भी रहे। इंद्रजीत सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दिया क्योंकि युद्ध अगर दूसरे दिन चलना था तो कुछ सैनिकों को जीवित रहने की आवश्यकता थी। अयोध्या की पक्ष में हनुमान के नेतृत्व में भयानक गज वाहिनी लड़ रही थी। तभी लंका को नेतृत्व करने के लिए कुंभकर्ण उनके समक्ष आ जाता है । कुंभकर्ण हाथियों के आँखों को निशाना बनाकर बाण चलाने के आदेश देता है । वह एक भीमकाय हाथी की आँख पर तीर लगाने में सफल हो जाता है किंतु श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त युद्ध हाथी पीछे नहीं हटा और अपने पैर के पास पड़े एक लंकाई सारथी के मृत शरीर को कुंभकर्ण पर फेंक देता है ।

कुंभकर्ण को यह एहसास हो जाता है कि कम से कम एक हाथी को मारना उनकी घुड़सवारों को बचाने के लिए ज़रूरी थी क्योंकि हाथी अपने वर्ग के लाश को कुचलते हुए आगे नहीं आएँगे। कुंभकर्ण खुद की बलिदान देकर ऐसा करने का फैसला करता है । हनुमान को ले जा रहे हाथी की दाई टाँग में तलवार घुसाती है । हाथी की मांसपेशियों को चीर डालते हैं और हाथी बहुत बुरी तरह से घायल हो जाता है । अयोध्याई सेना एक साथ आकर कुंभकर्ण पर बाण की वर्षा करते हैं । हनुमान भी उन पर भाला चलाते हैं । अंत में वह घायल हाथी कुंभकर्ण को मार डालता है और फिर खुद भी मर जाता है । कुंभकर्ण की साहसी अंतिम मुकाबले ने लंका की सेना की एक बड़े भाग को बचा लिया और पहले दिन का युद्ध का विराम हो गया ।

युद्ध के दूसरे दिन इंद्रजीत पुष्पक विमान का प्रयोग करता है । विभीषण विमान के चालक अकंपन को एक बिंदु पर वृक्ष रेखा के निकट विमान को उठाने का सुझाव देता है । युद्ध में राम का जीत सुनिश्चित होने के कारण अकंपन मान जाता है । इंद्रजीत विमान में बैठकर अयोध्या सेना की हाथियों पर आक्रमण करता है । इससे एक हाथी क्रोध में भागदड़ बचाने शुरू करते हैं तो अन्य हाथियाँ भी ऐसे करेंगे और इस शोर में मृत्यु अयोध्या की सेना की होगी। इस युद्ध पद्धि को 'जुजुत्सु' कहते हैं – अपने प्रतिद्वंदि की शक्ति का उसके विरुद्ध इस्तेमाल करने की युद्ध रीति। अकंपन पुष्पक विमान को नीचे वृक्ष रेखा में उसे बिंदु पर लेकर आते हैं जहाँ लक्ष्मण इंद्रजीत को मरने के लिए तैयार खड़ा था। इंद्रजीत पर भाले से वार करने के लिए लक्ष्मण तैयार हो जाता है । इंद्रजीत लक्ष्मण को देखने पर अपना निशाना बदलकर लक्ष्मण की और ज़हरीला बाण चलाता है । लक्ष्मण का भाला निशाना चूक जाता है किंतु इंद्रजीत का बाण लक्ष्मण की छाती में लगता है । अपने

भाई को चोट लगी देख भरत क्रोधित होकर अपना भाला इंद्रजीत की और फेंकता है । भाला बिना निशाने से चुके इंद्रजीत की छाती को चीरता है और उसकी तुरंत मृत्यु हो जाती है । युद्ध की द्वितीय दिन वहीं समाप्त हो जाता है ।

लंका को भारी क्षति लगी थी। युद्ध को आगे बढ़ने से केवल उनकी हार थी। इसीलिए रावण राम को 'इंद्र के द्वंद्व' के लिए चुनौती देते हैं और राम इसे स्वीकार करते हैं । द्वंद्व के लिए स्वयं भगवान इंद्र द्वारा निर्धारित नियमों के आधार पर मैदान तैयार करता है । धर्म के अनुसार योद्धा को अपने शत्रु को निष्पक्ष रूप से पराजित करना चाहिए इसीलिए राम द्वंद्व के लिए अस्त्र के रूप में तलवार चुनते हैं क्योंकि रावण की बाई बाँह घायल थी और वह धनुष चला नहीं पाएँगे। राम ने धर्म को चुना और वही सही समझा।

इंद्र के द्वंद्व की परंपरा के अनुसार दोनों योद्धा प्रति पक्षियों को अपनी अंतिम इच्छाओं की लिखित सूची समर्पित करना था जो जीवित बचेगा उसे मारे गए प्रतिपक्षी की अंतिम इच्छाओं की पूर्ति करना होगा। दोनों ने एक दूसरे को वह सूची दिया। राम का केवल एक ही माँग थी कि सीता, उनके भाइयों और सेना को बिना हानी किए लंका से जाने दिए जाए। दूसरी और रावण की इच्छा की सूची बहुत लंबी थी। दोनों एक दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण करने की शपथ लेकर द्वंद्व आरंभ करते हैं ।

रावण पूरी शक्ति के साथ लड़ते हैं । रावण दाई और बाई और से तलवार घूमते हुए राम पर हमला करते हैं किंतु राम ने ढ़ाल से सारे वार से खुद को बचाया। राम के गाल में चोट लगते हैं किंतु दर्द को न दिखाते हुए वह लड़ना जारी करते हैं । राम अपने शरीर को नीचे झुकाकर घूम गए और अपने लचीली कंधे को विस्तार करते हुए तलवार घुमाए। अत्यधिक वेग से पीछे से आयी वार से रावण आहत होते हैं । तलवार रावण के पेट को चीरते हुए वह एक गहरी घाव बन गया। रावण एक बार फिर राम पर वार करने के प्रयत्न करते हैं किंतु उनकी आयु और पेट में लगी घाव उन्हें सफल होने नहीं देते। रावण ने अपनी ढाल ऊँचा किया और तलवार का फलक ढ़ाल के ऊपर टिकाया जिसे 'शास्त्र सम्मान मुद्रा' कहते हैं । राम को यकीन हो जाता है की अंतिम वार का समय आ चुका है । राम फिसलने की झाँसा करके अपने बाएँ पैर को दृढ़ता से जमाया और ढ़ाल को मोड़ा। रावण का तलवार हाथ से फिसलने लगा। इस वार से रावण को अपने शरीर पलटना पड़ा और राम तेज़ी से रावण के ऊपर वार किया। तलवार रावण के पेट को चीरकर घुस जाता है और उनके पीठ का भेद करता है । वह अपने पेट के बल धरती पर गिर जाते हैं और वेदवती को याद करते हुए मृत्यु का वरण करते हैं ।

अमीश जी के अनुसार "युद्ध में कोई महिमा नहीं है। केवल पीड़ा और विनाश है। प्राचीन काल के संस्कृत के सबसे बड़े नाटककार भास ने लिखा था, यह युद्ध- भूमि वास्तव में बलि-क्षेत्र है, जहाँ मृत योद्धा बलि के शिकार हैं, युद्ध की चीखें मंत्र हैं, मृत हाथी वेदियां हैं, तीर बलि की दूब घास हैं, और घृणा और शत्रुता धधकती हुई आग है।"[20] और नरेंद्र कोहली के अनुसार "हम युद्ध को मानव मात्र के लिए एक अभिशाप मानते हैं। हम अकारण हिंसा नहीं चाहते। हम बिना कारण के किसी भी मनुष्य का रक्त बहाना नहीं चाहते, चाहे वह मनुष्य किसी भी जाति अथवा देश का क्यों न हो।"[21] दोनों लेखकों ने युद्ध की यथार्थ को दिखाने का प्रयत्न किया है । युद्ध परिणाम गौरवाविन्त न करते हुए उसकी क्रूरता को दिखाया है । इसमें अंतर केवल इतना है कि दोनों लेखक लंका में हुई है इस ऐतिहासिक युद्ध को वाल्मीकि रामायण में प्रस्तुत की गई युद्ध के साथ अपनी कल्पना को भी जोड़ा है । दोनों के राम कथा में युद्ध रीति, व्यूह, प्रयोग की गई अस्त्र सभी भिन्न है । किंतु परिणाम एक ही है - रावण की मृत्यु और धर्म का जीत। अमीश जी ने इंद्रजीत की मृत्यु भरत के हाथों से होती हुई दिखाई है जबकि वाल्मीकि रामायण में भरत उस युद्ध में उपस्थित ही नहीं थे। कोहली जी के अनुसार लक्ष्मण जब मृत्यु से लड़ रहे थे तब उसे बचाने के लिए हनुमान पूरे द्रोणागिरी पर्वत नहीं उठाते और किष्किंधा से औषधि की एक ढ़ेर लाते हैं । अमीश जी का रावण हार की अपेक्षा करके युद्ध किया तो कोहली जी का रावण में सब कुछ नष्ट होने के बावजूद भी अहंकार कम नहीं हुआ। दोनों लेखकों ने इस युद्ध को अपने दृष्टिकोण से सार्थक बनाया और दोनों इसमें सफल हुए हैं ।

5.1.6 शीर्षक की सार्थकथा

उपन्यास, कहानी, कविता या निबंध जैसे प्रकाशित पाठ का शीर्षक उस लिखित पाठ के तत्व एवं सारांश को समझने और पाठक के अंदर जिज्ञासा को बढ़ाने का काम करता है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी अपने राम कथा श्रृंखला के उपन्यासों को 'रामायण' नहीं कहा बल्कि ऐसे सरल एवं सार्थक शीर्षक दिए जिससे इस श्रृंखला का अध्ययन करने की, उस शीर्षक के पीछे कहानी को जानने की चाह पाठक के अंदर जगाते हैं । रामायण एक ऐसी पौराणिक महाकाव्य है जिसके अनेक बार पुनःलेखन हुआ है । इन सारे राम कथा संस्करणों के बीच अपनी राम कथा को अलग दिखाने के लिए और अपनी

[20] अमीश त्रिपाठी - लंका का युद्ध - पृ स - 442
[21] नरेंद्र कोहली - युद्ध 2 - पृ स - 194

कलम की एक छाप छोड़ने के लिए लेखकों ने बहुत ही सुक्षमता से शीर्षकों को चुना है । इन शीर्षकों की व्याख्या इस प्रकार है –

5.1.6.1 नरेंद्र कोहली की राम कथा श्रृंखला

कोहली जी की राम कथा श्रृंखला को अभ्युदय कहा जाता है जिसका अर्थ है वृद्धि, उदय या उन्नति। अर्थात राम की सांसारिक सौख्य तथा समृद्धि की प्राप्ति की यात्रा की ओर यह शीर्षक संकेत देता है । अपनी राम कथा श्रृंखला के शीर्षक के संबंध में कोहली जी का मत इस प्रकार है – "मेरे सर्जक मन ने रामकथा के जिस रूप को देखा था, उसके चार खंड बन रहे थे। पहला खंड वह था जहां विश्वामित्र ने राम को पीड़ित मानवता की सहायता की दीक्षा दी। दूसरा खंड वह था, जहां अपने घरेलू झगड़ों के कारण राम को बन जाकर पीड़ित मानवता के संपर्क में आने का अवसर मिला। तीसरे खंड में वे अपने संकल्प के कारण राक्षस-विरोधी शिविर में खड़े दिखाई दिए और राक्षसों से संघर्ष' आरंभ हुआ। चौथे खंड में राक्षसों की केन्द्रीय शक्ति-रावण से उनका युद्ध हुआ। इन्हीं कारणों से मैंने उन चारों उपन्यासों के नाम 'दीक्षा, 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' तथा 'युद्ध' रखे।"[22]

1. दीक्षा

दूरदर्शी विश्वामित्र राक्षस के अत्याचार से भारत को बेगुनाह जनता को मुक्त करने के लिए और राक्षसी संस्कृति को भारत में प्रसार होने से रोकने के लिए एक रणनीति तैयार करते हैं जिसके अनुसार इस कार्य को संपन्न करने के लिए योग्य दो व्यक्तियाँ – अयोध्या के राजकुमार राम और लक्ष्मण को चुनते हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु तो उन्हें 'दीक्षित' करते हैं ।

2. अवसर

विश्वामित्र से प्राप्त दीक्षा को क्रियान्वित करने में राम और लक्ष्मण को मिली 'अवसर' ही इस उपन्यास की मुख्य कथा है । अपनी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राम को वन में लोगों के बीच जाने की आवश्यकता थी किंतु राम की राज्याभिषेक करने का दशरथ का निर्णय इसके लिए बाधा बनता है परंतु कैकेयी की दो माँग उन्हें फिर से विश्वामित्र को दिए वचन की पूर्ति करने का अवसर देता है । धर्म की रक्षा के लिए कर्म क्षेत्र में राम और लक्ष्मण का प्रवेश अत्याचारों को समाप्त करने के लिए था और राम – लक्ष्मण का इस यात्रा के लिए प्रस्थान करते हैं ।

---

[22] नरेन्द्र कोहली – नरेन्द्र कोहली ने कहा – पृ स 28

3. संघर्ष की ओर

राक्षसी संस्कृति के विरुद्ध राम के संघर्ष की आरंभ की कथा इसमें कहा गया है। समाज में लोगों के साथ हो रही उत्पीड़न राम को राक्षसी शासन के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करता है और सीता की अपहरण में जब व्यक्तिगत पीड़ा से राम गुज़रते हैं वह इस 'संघर्ष की ओर' जाने की प्रेरणा को तीव्र करती है।

4. युद्ध

राक्षसी सत्ता की उन्मूलन की यात्रा के पहले पड़ाव में विश्वामित्र से प्राप्त दीक्षा युद्ध में आकर समाप्त होती है। इसमें धर्म की रक्षा के लिए राम और रावण के बीच भयंकर युद्ध होता है जिसमें राम को विजय प्राप्त होता है। निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि कोहली जी ने ध्येय से एक-एक उपन्यास को शीर्षक दिया है जिससे एक पूर्ण उपन्यास की कथा उसमें समाहित हो । लेखन कार्य की नामकरण प्रक्रिया में कोहली जी की प्रवीणता हमें इसमें देखने को मिलता है।

5.1.6.2 अमीश त्रिपाठी की रामचंद्र श्रृंखला

अमीश त्रिपाठी की रामचंद्र श्रृंखला की प्रथम तीन उपन्यास राम, सीता और रावण की कथा है और चतुर्थ उपन्यास राम - रावण युद्ध पर केंद्रित है। इस दृष्टिकोण से शीर्षक किस हद तक उपयुक्त है इसकी व्याख्या आगे दिया गया है।

1. इक्षवाकु के वंशज

हिंदू मिथक के अनुसार राजा इक्षवाकु सूर्यपुत्र है जिन्होंने 'इक्षवाकु वंशज' की स्थापना की थी। दशरथ एक सूर्यवंशी है, जिसके कारण राम भी सूर्यवंश का ही बीज है अर्थात राम, राजा 'इक्षवाकु के वंशज' है जो महान कार्य करने के लिए जन्म लिया है।

2. सीता मिथिला की योद्धा

अमीश त्रिपाठी की सीता एक बहादुर योद्धा है जिसने बचपन से ही हनुमान से युद्ध का कला सीख लिया था। शत्रुओं से अपनी आत्मरक्षा करती है, लंका की सेना से अकेली लड़ती है, अपने देश के प्रशासनिक कार्यों को संभालती है और सत्रह साल की उम्र में वह मिथिला की प्रधानमंत्री बनती है। रावण की आक्रमण से मिथिला देश को वह साहसपूर्वक सुरक्षा करती है। वह मिथिला की ऐसी राजकुमारी थी जो मिथिला की संरक्षक बन जाती है। उनकी शासन में मिथिला को अपनी पुरानी गौरव प्राप्त होती है। यह शीर्षक सही मायनों में इस उपन्यास के लिए उत्तम है।

3. रावण आर्यवर्त का शत्रु

अमीश त्रिपाठी का रावण एक ऐसा पात्र है जिसकी जन्म स्थान ने उपेक्षा किया। नाग जात में जन्म लेने के कारण उन्हें उनके पिता और समाज ने तिरस्कार किया। रावण को वहाँ से भाग कर भिक्षुओं की तरह गलियों में जीना पड़ा। आर्यों की भूमि आर्यवर्त ने रावण को पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिया। रावण इस आर्यावर्त से घृणा करके बढ़े हुए। वह व्यक्ति 'आयवर्ता का शत्रु' बन जाते हैं और बड़ा होकर इस आर्यावर्त से वह बदला भी लेते हैं।

4. लंका का युद्ध

यह शीर्षक सीधे और सरल रूप से इस उपन्यास कथा को व्यक्त करता है। इसमें सीता की अपहरण के पश्चात राम और रावण के बीच होने वाली युद्ध की गाधा का चित्रण हुआ है। अमीश जी ने इस युद्ध के संबंध में एक स्पष्ट चित्र पाठक के समक्ष रखा है जिसके कारण इस उपन्यास को पढ़ते हुए हम उसे युद्ध की कल्पना कर सकते हैं।

अमीश त्रिपाठी ने अपनी उपन्यास की शीर्षक बहुत ही सरल रखा है जिसके कारण पाठक के मन में कथा के संबंध किसी प्रकार की अस्पष्टता की गुंजाइश नहीं रहता। इस उपन्यास के शीर्षक को पढ़ते ही हम यह अनुमान लगा सकते है कि इस उपन्यास से हम क्या अपेक्षा कर सकते हैं। इस प्रकार चंद शब्दों में एक पूरी कहानी व्यक्त करने में अमीश जी सफल हुए है।

5.1.7 लेखन शैली

अमीश त्रिपाठी और नरेंद्र कोहली, कथावस्तु के अनुकूल भाषा का प्रयोग करने में सफल हुए हैं। साहित्यिक मानदंडों का पालन करके कथा की अभिव्यक्ति को सहज, सरल और सामान्य बनाया है। दोनों लेखकों ने अपनी राम कथा श्रृंखला में असाधारण कथा कौशल का प्रदर्शन किया और कहानी कहने की विशिष्ट शैली के माध्यम से अपनी कल्पनाशील दुनिया को प्रभावी ढंग से ज्वलंत वास्तविकताओं में बदल दिया।

कहानी की दृश्य पहलू या परिप्रेक्ष्य इस बात पर निर्भर करती है कि उस कथा को कैसे अभिव्यक्त किया गया है। अगर कहानी की मुख्य पात्र की दृष्टिकोण से कहानी की अभिव्यक्ति होता है तो उत्तम पुरुष में 'मैं या तुम' का प्रयोग होता है और अन्य पुरुष में 'यह, वह, ये, वे' का प्रयोग होता है। दोनों राम कथा श्रृंखला की कथावाचक खुद लेखक है, राम या रामायण के कोई अन्य पात्र नहीं है। इसीलिए दोनों उपन्यास अन्य पुरुष में लिखा गया है।

"राम के लिए परीक्षा का समय था । वे राक्षसों के मायावी युद्ध के अभ्यस्त नहीं थे। मांस-खण्ड वायु में उड़ता-सा यज्ञ-वेदी की ओर आ रहा था। उसे न रोका जाता तो यज्ञ भ्रष्ट हो जाता और पृथ्वी को छोड़ ऊपर उछले हुए मारीच को न रोका जाता, तो वह अपने खड्ग से राम पर प्रहार कर बैठता।"[23]

"राम टूट गए थे कि धेनुका, बलात्कार और हत्या का मुख्य आरोपी, कानूनी पेंचों की वजह से, ज़्यादा से ज़्यादा सजा पाने से बच गया थाः वह कम उम्र का था। लेकिन कानून तोड़ा नहीं जा सकता था। राम के चाहने पर भी नहीं। राम विधि प्रदाता, ने वही किया, जो वह कर सकते थे। लेकिन राम, रोशनी का राखी भाई, पछतावे में डूबा जा रहा था, वह अपनी बहन की दर्दनाक मौत का बदला नहीं ले पा रहा था। उन्होंने खुद को सजा दी। और ऐसा वह खुद को बार-बार दर्द देकर कर रहे थे।"[24]

आमतौर पर कहानी की आख्यान भूतकाल में होती है । कल का चयन कहानी की प्रवाह पर प्रभाव डालता है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल और कभी-कभी भूतकाल और अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग किया है । वर्तमान काल का प्रयोग कहानी की घटना और दृश्यों को वैसे ही अनुभव करने में पाठक की सहायता करते हैं, जैसे वह घटित हो रहा है ।

"किष्किंधा के बाहर के वनों में ही मुझे आर्य राम के जन-सैनिकों का शिविर मिल गया था।" हनुमान अपने श्वास को नियंत्रित करने का प्रयत्न कर रहे थे, "अनिंद्य को यहाँ की स्थिति की सूचना दी तो शेष कार्य का प्रबन्ध उसने करवा दिया। ये साथी भी उसी ने दिए। इन औषधियों की खोज भी उसी ने की। . . . भागने-दौड़ने का बहुत सारा कार्य शिल्पी ने किया. . .हनुमान कुछ रुककर बोले, "अनिन्द्य ने अपने सभी केंद्रों, शिविरों और आश्रमों में सूचना भिजवा दी है। सम्भव है प्रातः से पहले यहाँ राम की कुछ जन वाहिनियाँ पहुँच भी जाएँ. . .अनिन्द्य ने कहा था कि अब कई दिनों जन वाहिनियाँ पहुँचती रहेंगी।"[25]

"मेरे मित्र. . .'

कुंभकर्ण पलटा। और उसने हनुमान को अपने ऊपर खड़े देखा। आंखों में आंसू लिए।

---

[23] नरेन्द्र कोहली - दीक्षा - पृ स 68

[24] अमीश त्रिपाठी - राम इक्षवाकु के वंशज - पृ. स 132

[25] नरेन्द्र कोहली - युद्ध 2 - पृ स 234 - 235

शक्तिशाली कुंभकर्ण मुस्कुराया। कमजोरी से। 'प्रभु... हनुमान... हनुमान एक घुटने के बल नीचे झुके और उन्होंने धीरे से कुंभकर्ण का हाथ पकड़ लिया। 'मुझे खेद है... मुझे खेद है..."[26]

दोनों लेखकों ने पूर्व दीप्ति शैली का भी प्रयोग किया है जैसे –

"तो सुनो, पुत्र!" गुरु अपने मन का निरीक्षण कर रहे थे, उसमें बसी घटनाओं और चित्रों को उलट-पलट रहे थे। वे किसी और ही संसार में जा पहुँचे थे। राम और लक्ष्मण, गुरु से सटते हुए-से, उत्सुक दृष्टि से उनके मुख की ओर देखते चल रहे थे। पुनर्वसु तथा अन्य ब्रह्मचारी भी अपनी नियमित दूरी छोड़कर, अपेक्षाकृत कुछ निकट आ गए थे। केवल सामान ढोने वाले छकड़े ही पीछे छूट गए थे।

गुरु ने कथा आरंभ की

गौतम का अनेक वर्षों पुराना स्वप्न आज पूरा हुआ था।"[27]

"एक अंधेरा सा उन पर छाने लगा, उन्हें अपने पैरों और हाथों पर रस्सी सी बंधती महसूस हुई।

राम... बचाओ मुझे...

और फिर अंधेरा पूरी तरह छा गया।

अड़तीस साल पहले, त्रिकुट पहाड़ियों के उत्तर में, भारत"[28]

अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला की मूल भाषा अंग्रेज़ी होने के बावजूद भी संस्कृत शब्दों, कहावतों एवं श्लोकों का प्रयोग कई प्रसंग में किया गया है।

"पुशनेकरशे यम सूर्य प्रजापत्यः व्यूहः रश्मिन समूहः तेजोः;

यत्ते रूपम् कल्याणतमम् तत्ते पश्यामि यो'सावसौ पुरुष सोहस्मि।

ओ प्रभु सूर्य, प्रजापति के पालक सूर्य, संन्यासी पथिक, खगोलीय नियंत्रक; अपनी किरणों को बिखरा दो, अपने प्रकाश को क्षीण हो जाने दो;

प्रकाश के परे मुझे अपना प्रताप देखने दो; और महसूस करने दो जो परमेश्वर आप में है, वही मुझमें भी है।"[29]

---

[26] अमीश त्रिपाठी - लंका का युद्ध - पृ स - 379
[27] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ स 91
[28] अमीश त्रिपाठी - सीता मिथिला की योद्धा – पृ. स 16
[29] अमीश त्रिपाठी - राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 45

"वायुर अनिलम अमृतमः गथेदं भस्मान्तं शरीरम्

इस अस्थायी शरीर को जलकर भस्म होने दो। लेकिन प्राणात्मा तो पारलौकिक है। उसे अनश्वर सांसों में समा जाने दो।"[30]

"स्वगृहे पूज्यते मूर्खः, स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान्सर्वत्र पूज्यते।

एक मूर्ख की पूजा उसके घर में होती है। एक मुखिया की पूजा उसके गाँव में होती है। एक राजा की पूजा उसके राज्य में होती है। मगर विद्वान की पूजा सब जगह होती है।"[31]

"वायुरनिलममृतमथेदम् भस्मांतम् शरीरम्।

अग्नि भले ही इस पार्थिव शरीर को भस्म कर दे; मगर प्राण-वायु किसी अन्य स्थान की वासी है। यह अविनाशी प्राण-वायु के पास वापस पहुंचने की राह पाए।"[32]

अमीश त्रिपाठी के रामचंद्र श्रृंखला के हिंदी अनुवाद में किलोमीटर, इंच जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हमें देखने को मिलता है साथ ही हिंदी की बोलचाली भाषा में प्रयोग की जाने वाले शब्द 'वो' का इस श्रृंखला में प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है ।

"लंकाई सेना एक भी इंच आसानी से हारने को तैयार नहीं थी; अयोध्याइयों को एक-एक उंगली ज़मीन भी ढेरों खून देकर जीतनी पड़ रही थी।"[33]

"लेकिन वो रोया नहीं। उसने अपने दुख को अपनी आत्मा में दबाए रखा। इसे बाहर निकालने का समय आएगा। बाद में"[34]

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि दोनों लेखक की भाषा शैली संप्रेषणीय, वैचारिक एवं नाटकीय होने के साथ-साथ सरल एवं प्रवाहमय है जो आलोचकों को प्रभावित करने के लिए नहीं बल्कि अपने विचारों को पाठकों तक स्पष्ट रूप से पहुँचाने के लिए लिखा गया है ।

5.1.8 प्रकृति एवं संस्कृति का चित्रण

'वसुधैव कुटुंबकम' वाक्यांश अर्थात पूरी संसार एक बड़े परिवार की तरह है यह सुझाव देता है कि सभी लोग जुड़े हुए हैं और उन्हें एक परिवार की तरह ही एक-दूसरे के साथ देखभाल और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए। इस विचार के बावजूद,

---

[30] अमीश त्रिपाठी - सीता मिथिला की योद्धा - पृ. स 119
[31] अमीश त्रिपाठी - रावण आर्यवर्त का शत्रु - पृ स - 298
[32] अमीश त्रिपाठी - लंका का युद्ध - पृ स - 7
[33] अमीश त्रिपाठी - लंका का युद्ध - पृ स - 365
[34] अमीश त्रिपाठी - लंका का युद्ध - पृ स - 385

लोग अक्सर प्रकृति पर इसके प्रभाव से अंजान होते हैं और पर्यावरण पर अपना नियंत्रण बनाए रखते हैं । साहित्य के कई विद्वान अपने लेखन कार्य में पर्यावरण का अध्ययन करते हैं । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने अपनी राम कथा श्रंखला में वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य के संदर्भ में प्रकृति का चित्रण करने का प्रयत्न किया है।

किसी कथा से संबंधित युग, समाज, जीवन और समय को सही मायने में समझने के लिए समकालीन पर्यावरण और सांस्कृतिक स्वरूप का चित्रण करना महत्वपूर्ण है । इससे उस काल की विशेषताओं, रीति–रिवाजों, मान्यताओं, जीवन जीने के तरीकों और परंपराओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलती है । कोहली जी की राम कथा श्रंखला में यह प्रभावी ढंग से चित्रित करते हैं । आश्रम, पारिवार, गरीबों की गंधी गलियाँ, रावण के स्वर्ण लंका, राक्षसों की क्रूरता और ऋषियों की आध्यात्मिकता को प्रतिबिंबित करने वाले परिवेश को जीवंत रूप से प्रस्तुत किया है ।

नरेंद्र कोहली ने प्रकृति की यथार्थवादी सुंदरता को चित्रित करने का प्रयास किया है, यह स्वीकार करते हुए कि यह रमणीय दृश्यों समाज के गरीब और प्रताड़ित लोगों द्वारा सहन की गई कठिनाइयों की कीमत पर आती है ।

"नगरों तक में खाद्य – सामग्री उपलब्द नहीं है। कहीं दुर्भिक्ष है, कही बाढ़ है। लोग कीड़ों – मकोड़ों के सामान भूखे मर रहें है और सारा अन्न श्रेष्टियों के भंडार गृह में पड़ा है।"[35]

"मार्ग–भर सीता दूर तक फैले खेतों, उनमें काम करते कृषक स्त्री–पुरुषों को देखती आई थीं। कभी–कभी वे किसी जनपद के बीच, किसी ग्राम के पड़ोस से भी निकले थे। नगरों के निकट का मार्ग उन्होंने जान–बूझकर नहीं लिया था। सीता मार्ग में आए वन–प्रांतरों को भी देखती रही थीं। सोचती रही थीं–अब तक उन्होंने महलों का सुव्यवस्थित जीवन ही देखा था, जहाँ सब–कुछ उपलब्ध था और कोई असुविधा नहीं थी।"[36]

अपनी रामचंद्र श्रृंखला में नरेंद्र कोहली यह दर्शाने का प्रयास करते हैं कि कैसे आधुनिक समाज जल जैसे प्राकृतिक संसाधन पर नियंत्रण करने का प्रयास करता है, जिससे जनता तक इसकी पहुँच सीमित हो जाती है।

"सीता ने राम के पीछे–पीछे जल में प्रवेश किया।

---

[35] नरेन्द्र कोहली – दीक्षा – पृ. स 21

[36] नरेन्द्र कोहली – अवसर – पृ. स 87

"यहाँ और कोई नहीं आएगा?"

"आना निषिद्ध तो नहीं।" राम बोले, "यह अयोध्या का राजघाट नहीं है, जिस पर आज्ञा द्वारा प्रतिबंध लगाया जा सके। पर किसी के आने की संभावना कम ही है । आस-पास आबादी प्रायः नहीं है । जहाँ आश्रम अथवा ग्राम होंगे-मंदाकिनी उनके पास से ही बहती होगी। उनकी आवश्यकता वहीं पूरी होती होगी, वे यहाँ नहीं आएँगे।"

"अयोध्या में सरयू हमारी होते हुए भी हमारी नहीं थी। मंदाकिनी हमारी न होते हुए भी हमारी है । राजनीतिक अधिकार से प्राकृतिक अधिकार कितना अधिक सहज है ।"

"अधिकार तो सारा धरती का है।" राम बोले, "स्वयं को धरती की संतान बना लेने पर सारे अधिकार प्राप्त हो जाते हैं।"[37]

नरेंद्र कोहली ने बालि और मायावी के प्रसंग के ज़रिए यह दर्शाने का प्रयास किया है कि कैसे आधुनिक भारत धीरे-धीरे उन लोगों के कारण अपनी सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को खो रहा है जो अपनी जड़ों की उपेक्षा करके विदेशी संस्कृतियों की नकल करते हैं । वह पूरे भारत में राक्षस राजा रावण और उसके अनुयायियों के प्रभाव से प्रसार हो रही राक्षसी संस्कृति के साथ इसका तुलना करते है।

उन्होंने रावण की लंका के चित्रण के माध्यम से उस असमानता को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है जहाँ अमीर लोग प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव करते हैं और उसका आनंद लेते हैं जबकि दरिद्र कम ऐसी सुख से वंचित हैं ।

"हनुमान ने बहुत सारे राज्य और राजधानियाँ देखी थीं, किंतु लंका जैसा नगर पहले कभी नहीं देखा था... प्रासादों की पंक्तियों के परे, राजमार्गों से कुछ हटकर साधारण भवन थे। उन भवनों की भी जैसे अपनी पुरियाँ बसी हुई थीं...और सबसे अंत में कच्चे घर थे, कुटीर, झुग्गियाँ, झोंपड़ियाँ... सागर-तट की दुर्गंध, कीच तथा अन्य प्रकार की गंदगी में बसे वे लोग... लगता था यह मानव-यातना का एक पृथक् सागर था। निर्धनता, असुविधा, शोषण, वंचना, क्रूरता और अज्ञान में पले ये लोग देखने वालों की आँखों को कष्ट देते थे। मन में उनके प्रति करुणा न हो तो उनके प्रति घृणा और विरोध जागता था कि इतने साफ-सुथरे नगर में ये गंदे लोग कहाँ से आ गए; और उन्हें भी मनुष्य मानकर उनके प्रति मन में करुणा और ममता रखकर देखो तो स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता था कि वे धन के विषम तथा अन्यायपूर्ण वितरण के षड्यंत्र में फँसे, कष्ट

[37] नरेन्द्र कोहली - अवसर - पृ. स 117 - 118

पाते हुए दुःखी लोग थे, जो अपनी असुविधाओं के विरुद्ध लड़ते हुए भी व्यवस्था के क्रूर रक्षकों के द्वारा अभावों में जीने के अभ्यस्त बनाए जा रहे थे...बालि के राज्य-काल में किष्किंधा में भी कुछ ऐसा ही घटित हो रहा था, किंतु वहाँ निर्धनता के साथ-साथ वैभव का इतना विराट् प्रदर्शन नहीं था। लंका में इतनी अट्टालिकाओं की पृष्ठभूमि में सागर-तट पर धूप और कीचड़ में जीने वाले ये लोग अधिक वंचित और पीड़ित लगते थे।"[38]

अमीश त्रिपाठी ने अपनी रामचंद्र श्रृंखला में वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के विशद वर्णन के माध्यम से प्रकृति की सुंदरता और प्राचीन भारत की समृद्ध संस्कृति को खूबसूरती से दिखाया है । उन्होंने कथा में प्राचीन भारतीय परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक मानदंडों के तत्वों को जटिल रूप से पिरोया, जिससे उस युग की वास्तुकला, जीवंत त्योहारों और विविध सांस्कृतिक प्रथाओं की झलक मिलती है । अमीश जी ने अपनी कहानी में प्रकृति, संस्कृति और पात्रों के जीवन के बीच संबंध को उजागर किया, जिससे प्राचीन भारत के स्पष्ट चित्र को पाठकों के लिए जीवंत कर दिया।

अमीश जी ने अपनी रामचंद्र श्रृंखला में प्राचीन भारतीय शहरों और गाँवों का इतने विस्तृत और गहन विवरण गढ़ा है कि ऐसा लगता है जैसे उन्होंने उस ऐतिहासिक काल का अनुभव किया हो । अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने कुशलतापूर्वक मिथिला की वास्तुकला और केरल की संस्कृति की मनोरम छवियों को चित्रित किया जिससे पाठकों को यह महसूस हुआ कि वे कथा में तल्लीन होकर स्वयं उन स्थानों का सैर कर रहे है ।

"मधुकर निवास से परे, मिथिला नगर अपेक्षाकृत ज़्यादा व्यवस्थित यथा, अच्छे से बने हुए मार्ग, आलीशान भवन, आलीशान तो बस कहने की बात है, अन्यथा अयोध्या की वास्तुकला की तुलना में तो वे कहीं नहीं ठहरते। खुरदरे, रंगहीन कपड़ों में घूम रहे दो भाई, वहां के निवासियों को नज़र भी नहीं आ रहे थे।"[39]

"केरल पर देवताओं का अनुग्रह था। वहां सब चीजों का आधिक्य थाः गहरे पानी की झीलें, अप्रवाही जल और लगभग हर रास्ते को काटती नदियां; घने वनों ने आगे के मार्ग को दुर्गम बना दिया था; ऊँचे-ऊँचे, टेढ़े- मेढ़े पहाड सबसे गहन भक्तों के भी साहस की परीक्षा लेते थे; और वन्य पशु कभी-कभी इस यात्रा पर अरुचिकर और

[38]नरेन्द्र कोहली - युद्ध 2 - पृ. स - 7

[39] अमीश त्रिपाठी - राम इक्षवाकु के वंशज - पृ. स 212

अकस्मात विराम लगा देते थे। यह शबरीमलय की यात्रा को बहुत सुगम नहीं बनाता था।"[40]

अमीश जी ने भारत में प्राचीन मंदिरों और स्मारकों की भव्यता का खुलासा किया है और रीति-रिवाजों, परंपराओं तथा समृद्ध विरासत पर प्रकाश डाला है ।

"वैद्यनाथ मन्दिर घने वन के बीच में बनाए गये अनेक मन्दिरों का विशाल परिसर था। वहाँ पूर्व विष्णुओं के, भारत की रक्षा करने वाली अनेक देवियों के, इन्द्र देव, वरुण देव, अग्नि देव एवं अन्य देवी-देवताओं के मन्दिर थे। निस्सन्देह, सबसे विशाल मन्दिर भगवान रुद्र था। महादेव का। देवाधिदेव का। वैद्यनाथ का मुख्य मन्दिर एक विशाल कमल के आकार में निर्मित था। इसका एक अजटिल मगर विशाल केन्द्र था, जिसमें एक विशाल कक्ष, गर्भगृह, और पत्थर और गारे का एक शिखर था, जो आगम वास्तुकला के ग्रन्थों के मापदंडों पर आधारित थे। पचास मीटर का विशाल मुख्य शिखर पन्द्रह मीटर के आधार से निकला था। आधार के ऊपर लकड़ी के एक सौ आठ 'पत्ते' लगाए गये थे- जो कि वास्तुकला का अद्‌भुत प्रदर्शन थे। हरेक पत्ता एक वयस्क आदमी से चार गुणा बड़ा था। दुनिया की सबसे सख्त लकड़ियों में मानी जाने वाली साल वृक्ष की मज़बूत लकड़ी से बने इन पत्तों को किसी रासायनिक प्रक्रिया से और मज़बूत बनाया गया था और उन्हें गुलाबी रंगा गया था। उन्हें एक के ऊपर एक चार स्तरों पर रखा गया था जिससे एक विशाल कमल का फूल बन सके जो मन्दिर के केन्द्र को घेरे हुए था। मुख्य शिखर को पीला रंगा गया था और वो एक विशाल गर्भ-केसर की तरह इस पुष्प के बीच से निकल रहा था। आधार को कमल के तने का रूप देने के लिए हरा रंगा गया था। लम्बा आधार खोखला था और मन्दिर के सुरंग के आकार के द्वार के रूप में काम करता था।"[41]

"प्रसिद्ध शबरीमलय मंदिर भगवान अयप्पा को समर्पित था। भगवान अयप्पा पिछले महादेव प्रभु रुद्र और देवी मोहिनी (विष्णु) के पुत्र थे। तीर्थयात्रा के दिनों में भारत भर से उपासक अस्थायी संन्यास की शपथ लेकर यहाँ आते थे। मंदिर का प्रबंधन उस क्षेत्र का एक छोटा सा वनवासी समुदाय करता था, जिसकी प्रमुख वन-देवी शबरी थीं। वो मंदिर के आसपास रहने वाले समुदाय के मामलों का भी प्रबंधन करते थे।"[42]

---

[40] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ. स – 49
[41] अमीश त्रिपाठी – रावण आर्यवर्त का शत्रु – पृ. स – 41 – 42
[42] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ. स – 39

अमीश त्रिपाठी चिल्का झील को एक शानदार और शाँत जगह के रूप में चित्रित किया है । वह इसे खूबसूरत पहाड़ियों से घिरी एक आश्चर्यजनक झील के रूप में वर्णित करते हैं। इस सुंदर स्थान को शांत वातावरण के रूप में दर्शाया गया है, जो कहानी के रहस्यमय और मनोरम सार में योगदान देता है ।

"दुनिया के विशालतम अनूपों में शामिल चिल्का एक विशाल अनूप है, जो भारत के पूर्वी तट पर उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम में 1000 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है । प्रचंड महानदी की कुछ बड़ी सहायक नदियाँ जैसे दया और लूना इस झील में आकर मिलती हैं । इनके अतिरिक्त पचास अन्य छोटी नदियाँ भी चिल्का में मिलती हैं । मानसून के दौरान, भारी बारिशों से झील में और पानी भर जाता है ।

महानदी के दहाने के पास स्थित कलिंग राज्य में पहली बार आने वाले व्यक्ति को यह समझने के लिए क्षमा किया जा सकता है कि इसकी अथाह समृद्धि का कारण उपजाऊ धरती, मीठे पानी की बहुतायत और नियमित एवं प्रचुर वर्षा हैं । वास्तविकता में, हालाँकि कृषि निश्चय ही राज्य की सम्पत्ति का एक बड़ा स्रोत थी, मगर इसके छलकते कोष दूर-पाम अन्य क्षेत्रों के साथ होने वाले श्रेष्ठ व्यापार का परिणाम थे। और इस व्यापार के केन्द्र में थी चिल्का झील।"[43]

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते है की नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी का प्रकृति सौन्दर्य और प्राचीन भारत के सांस्कृतिक लोकाचार का चित्रण पाठकों को बीते युग में ले जाने का काम करता है, जो उस काल की सभ्यता को आकार देने वाली समृद्ध विरासत और मूल्यों की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है । उनका दृष्टिकोण ऐतिहासिक तत्वों को कल्पनाशील कहानी कहने के साथ जोड़ता है, जो पाठकों को भारत की सांस्कृतिक विरासत की सुंदरता और गहराई की सराहना करने में सक्षम बनाता है ।

5.1.9 समसमायिक विषयों में प्रासंगिकता

नरेंद्र कोहली ने 1971 के बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरणा लेते हुए अभ्युदय लिखा। ऐतिहासिक लड़ाइयों की तुलना महाभारत युद्ध से करने के सामान्य दृष्टिकोण से पृथक, उन्होंने घटनाओं को चित्रित करने के लिए रामायण की पृष्ठभूमि का उपयोग करके एक अलग कथा का विकल्प चुना। बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम जिसे अंग्रेजी में 'बंग्लादेश लिबरेशन वार' कहा जाता है, 1971 में पूर्वी पाकिस्तान (अब

[43] अमीश त्रिपाठी - रावण आर्यवर्त का शत्रु - पृ स - 49 - 50

बांग्लादेश) और पश्चिमी पाकिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान) के बीच हुआ था। यह संघर्ष पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के बीच लंबे समय से चले आ रहे राजनीतिक, आर्थिक और भाषाई मतभेदों के कारण उभरा, जो भौगोलिक रूप से भारत से अलग थे। उन्होंने युद्ध के परिणाम एवं कठोर वास्तविकताओं का खुलासा किया और आम लोगों की पीड़ा पर प्रकाश डाला। भारत के बाहर घटी इस दुखद घटना को चित्रित करने के लिए रामायण की महाकाव्य कहानी को एक माध्यम के रूप में उपयोग किया।

पाकिस्तानी सेना ने विद्रोह को दबाने के लिए पूर्वी पाकिस्तान में एक सैन्य अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापक हिंसा, अत्याचार और जनता के जीवन की हानि हुई । युद्ध के परिणामस्वरूप लाखों लोगों का विस्थापन हुआ और क्षेत्र में गहरा राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन भी हुआ। इस संघर्ष ने आने वाले वर्षों में भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों को भी तनावपूर्ण बना दिया।

लेखक ने समकालीन परिदृश्य, विशेष रूप से बांग्लादेश के राजनीतिक संदर्भ और रामायण की कहानी के बीच समानताएँ चित्रित की। बांग्लादेश युद्ध और उसके विरुद्ध बौद्धिक प्रतिरोध से प्रभावित होकर लेखक को यह उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित किया गया। लेखक सत्य के लिए खड़े इन बुद्धिजीवियों की सत्यनिष्ठा से प्रभावित हुआ, जिसने उसकी कथा को प्रेरित किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि किष्किंधा और लंका जैसे दूर देशों में जाकर राम ने युद्ध किया और वहाँ के राजाओं को अधिकार देकर आ गये उसी प्रकार भारत ने भी युद्ध के बाद बांग्लादेश के हाथों सत्ता सौंपा। डॉ. के सिन्धु के अनुसार "जिस प्रकार महाशक्ति अमरीका पाकिस्तान को शस्त्रों की सहायता देता रहा उसी प्रकार शिव का प्रसाद रावण को प्राप्त था। लेखक को लगा कि वनवासी बुद्धिजीवी, आश्रमों के ऋषिगण बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि हैं, और वे रावण के अत्याचारों के विरुद्ध सोचने के लिए जनता को प्रेरित करते हैं । लेखक का यह दृष्टिकोण अपने आप में यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक युग की परिस्थितियों से प्रभावित होकर मिथकीय परिवेश किस प्रकार आधुनिक साहित्य की विषय-वस्तु बन जाता है । लेखक ने अभ्युदय की कथा को रामकथा पर ही आधृत रखा है ।"[44]

नरेंद्र कोहली ने खान श्रमिकों पर होने वाली शोषण का वर्णन किया, जहाँ उन्हें खान मालिक अधिक समय काम कराते थे, किंतु उन्हें अपर्याप्त वेतन और खराब जीवन स्थितियों का सामना करना पड़ते हैं । अपनी रामचंद्र श्रृंखला में में, कोहली जी

[44] डॉ. के. सी. सिन्धु – रामकथा कालजयी चेतना – पृ. स – 14

मार्क्सवाद की याद दिलाते हुए एक परिदृश्य का चित्रण करते हैं, जिसमें राम इन श्रमिकों का उद्धार करते हैं, उन्हें मुक्ति और स्वतंत्रता की महत्व समझाते हैं ।

अमीश जी वर्तमान घटनाओं को प्राचीन भारतीय मानचित्र में प्रक्षेपित करने में कुशल है । उन्होंने राम इक्ष्वाकु के वंशज में दिल्ली के बहुचर्चित बलात्कार की घटना जिसमें निर्भया का बेरहमी से एक से अधिक लोगों ने मिलकर बलात्कार किया था। यह भयावह अपराध 2012 में हुआ था। यह घटना भयावह थी। छह लोगों ने एक लड़की का कई घंटों तक यौन उत्पीड़न किया, जब वह दिल्ली शहर में एक बस में यात्रा कर रही थी। उसके बाद उसे बस से फेंक दिया गया था। उसके साथ हुई इस दुर्व्यवहार के कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गयी। इसमें कुल छह गुनहगार थे, पाँच में से एक ने जेल में आत्महत्या कर ली और अन्य चार अपराधियों को अदालत ने दोषी ठहराया और मौत की सजा सुना दी गयी। मोहम्मद अफ़रोज़ नाम के एक नाबालिग को किशोर न्याय अधिनियम के अनुसार सुधार सुविधा में अधिकतम तीन साल की कैद की सज़ा दी गई थी। तीन साल बाद मोहम्मद अफ़रोज़ को रिहा कर दिया गया और वह बेफिक्र जिंदगी जी रहा है । इससे भारतियों को झटका लगा जो महिलाओं के खिलाफ इन अपराधों से राहत चाहते थें ।

समसामयिक समस्याओं के साथ तालमेल बिठाते हुए और प्रचलित सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील अमीश जी, रामचन्द्र श्रृंखला में इस मामले को प्रमुखता से उजागर करते हैं । उपन्यास में, एक दयालु चिकित्सक रोशनी, जो परोपकार के लिए भी जानी जाती थी, हैवानों के एक समूह के हाथों इसी तरह की स्थिति का शिकार बन जाता है । सभी दोषियों को पकड़ लिया जाता है और मौत की सज़ा दी जाती है । हालाँकि मुख्य अपराधी धेनुका नाबालिग है और अयोध्या के कानूनों के अनुसार उसे मृत्यु की सज़ा नहीं दि जा सकती।

इक्ष्वाकु के वंशज में, राम सभी नियमों और विनियमों का पालन करते हैं । वह अयोध्या शहर और राज्य के बाकी हिस्सों में व्यवस्था और कानून बनाए रखने के लिए प्रभारी थे । इसीलिए उनके महान साहस और धार्मिकता के साथ-साथ उन्हें एक अत्यंत गंभीर युवा विचारक के रूप में दर्शाया गया है जो हमेशा धर्म का समर्थन करता है । राम अपराधी को मृत्युदंड देकर कानून का उल्लंघन करने से इनकार करते हैं ।

राम भी बाकी सभी लोगों की तरह ही दुखित है, वह अपने द्वारा स्थापित नियमों से विवश महसूस करते हैं । ऐसे घिनौने कृत्य के अपराधी को दण्डित न होते देखना उन्हें

बहुत पीड़ा पहुँचाते हैं । हालाँकि, वह आशंकित है कि यदि वह नियमों की अवहेलना करता है और अपराधी को वयस्क के रूप में दंडित करता है तो यह कम गंभीर अपराधों में भी नाबालिगों को दंडित करने का रवैया शुरु हो जाता। वह गलत उदाहरण स्थापित करने से डरते हैं । नियमों का पालन करना उन्हें सभी के नज़र में विरोधी बना देता है, जैसा कि अयोध्या में लोगों की माँग थी।

अमीश जी ने प्राकृतिक न्याय में बाधा डालने वाले कानूनों के कारण होनेवाली देश की पीड़ा को उजागर किया है । वह आपराधिक मामलों में नरमी और राजनीतिक प्रभावों के कारण भारत के संघर्ष का भी संकेत देते हैं, कानूनों के निष्पक्ष और लचीले होने की संभावना पर सवाल उठाते हैं । अंत में कानून से अधिक न्याय पर विश्वास रखनेवाले भरत उस मुज़्रिम का खून करता है और अमीश जी इस निष्कर्ष के माध्यम से ऐसे पीड़ितों के लिए न्याय सुनिश्चित करते हैं।

दोनों लेखक भारत के संवेदनशील समसामयिक मुद्दों पर प्रश्न उठाते है और अपने अद्वितीय दृष्टिकोण से समाधान पेश करते हैं । इन मुद्दों को रामायण जैसे महाकाव्य में पिरोने में उनकी सफलता ही उनके द्वारा लिखी गई राम कथा श्रृंखला को विशिष्ट बनाती है ।

5.1.10 उद्देश्य एवं संदेश

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के राम कथा श्रृंखला में राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव और विश्वामित्र जैसे पात्र पौराणिक और समकालीन दोनों चेतनाओं का प्रतीक हैं । अपनी पौराणिक पृष्ठभूमि के बावजूद, कहानी आधुनिक युग से संबंधित मुद्दों को संबोधित करते हुए मानवीय वास्तविकता से मेल खाती है । लेखक समसामयिक समस्याओं पर चर्चा करते हुए पौराणिक पात्रों को प्रासंगिक मानवीय स्तर पर लाता है । कथा मानवीय दुःख और दर्द को उजागर करती है, जिसमें राम लोगों को पीड़ा से मुक्त करने, उन्हें सभ्यता और संस्कृति के एक नए युग में ले जाने का प्रयास करते हैं ।

प्राचीन मिथकीय लेखकों ने एक समग्र सामाजिक चेतना को मूर्त रूप दिया, जबकि आधुनिक लेखक सामाजिक और व्यक्तिगत पहलुओं के बीच विभाजित संवेदनाओं का उजागर किया है । इन चेतनाओं के बीच संतुलन खोजना जीवन में संतोष प्राप्त करने का एक मार्ग है, जिसे समकालीन लेखकों ने ईमानदारी से शुरू किया है और कुछ हद तक हासिल भी किया है ।

राम और सीता भारतीय विरासत में प्रतिष्ठित सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में खड़े हैं, जो चुनौतीपूर्ण समय के दौरान मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी, रावण राम और सीता के व्यक्तित्व एवं मानसिक दुविधाओं को दिखाया है, जिससे उनके अंतर दबी हुई भावनाओं को प्रदर्शित करने की अनुमति देता है । समकालीन लेखक अक्सर इन तीन केंद्रीय पात्रों के मूलभूत गुणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए रामायण कथा को एक नया मोड़ प्रदान करने का प्रयत्न करते हैं ।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा लेकर राम कथा लिखा है । उनकी लेखन शैली विद्वतापूर्ण का प्रदर्शन करने से अधिक प्रभावी ढंग से सार को व्यक्त करने में ध्यान केंद्रित किया है । राम चंद्र श्रृंखला के माध्यम से, पाठक जीवनशैली, युद्ध, राजनीति, शासन और अन्य विभिन्न पहलुओं की खोज करते हुए अपनी विरासत से फिर से जुड़ते हैं । ये पुस्तकें समसामयिक मुद्दों को संबोधित करती हैं जो अक्सर युवा पीढ़ी सामना करते हैं । प्रस्तुत समाधान शास्त्रीय दर्शन और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाते हैं, एक सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं । इनके मुक्त-प्रवाह कथा शैली किताबों को समझने में आसान और दिलचस्प विचारों का खज़ाना बनाती है ।

निष्कर्ष

इस अध्याय में मैंने नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला में पाई गई साम्य और वैषम्यों की तुलना के साथ विश्लेषण भी किया है । कोहली जी की राम कथा श्रृंखला 1975 से 1978 के बीच प्रकाशित हुए थे, जबकि अमीश जी की राम कथा श्रृंखला 2015 से 2022 बीच प्रकाशित हुए। इतनी बड़ी समय अंतराल और अलग-अलग भाषाओं में लिखे जाने के बावजूद भी इन दोनों के राम कथा श्रृंखलाओं के बीच समानताएँ उल्लेखनीय हैं । दोनों लेखकों का लक्ष्य अपनी-अपनी समय के भारत की अवस्था की एक रेखाचित्र राम कथा श्रृंखला की ज़रिए व्यक्त करना था। दोनों श्रृंखलाओं ने अपने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल की और अपने इस लेखन कार्य के माध्यम से भारत के ऐतिहासिक आख्यान को एक नया रूप दिया।